# दिव्य उपदेश



**ग्रंथ-द्वारा वैष्णव-जनेर कृपा पाइ।**

**वैष्णव-कृपाय कृष्ण-लाभ हय भाइ।।**

"मैं आशा करता हूँ कि इस पुस्तक को प्रस्तुत करके मैं वैष्णवों की कृपा प्राप्त कर सकूँगा, क्योंकि, मेरे प्रिय बन्धुओ, कृष्ण प्राप्ति एकमात्र वैष्णवों की कृपा से ही संभव है।"

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर कृत 'कल्याण कल्पतरु' से उद्धृत)

।। श्रीश्रीगुरुगौराङ्गौ जयतः ।।

# दिव्य उपदेश

श्रील गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज

GOLDEN AGE MEDIA
BACK TO CULTURE



**संकलन**

सर्वसाक्षी दास

मो॰– +91–9311197714

e-mail: sarvasakshi.gkg@gmail.com

**प्रकाशन**

गोल्डन एज मीडिया

नन्दगोपाल जीवन दास

मो॰– +91–8506805060

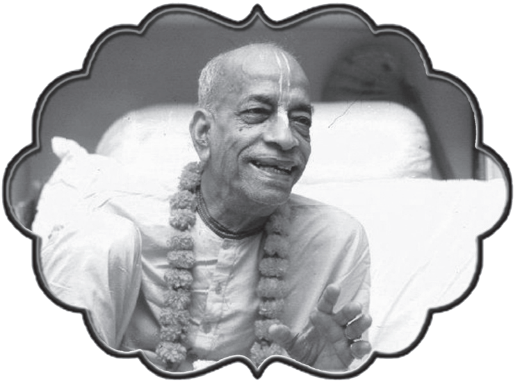
e-mail: info@goldenagemedia.org

website: www.goldenagemedia.org



- - Layout and Design : Sarvasākṣi Dāsa - -

# समर्पण



कृष्णकृपाश्रीमूर्ति

श्रीश्रीमद् ए०सी० भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद

संस्थापकाचार्य: अन्तर्राष्ट्रीय श्रीकृष्णभावनामृत संघ

# विषय सूची

भूमिका

शिष्यों के नाम सन्देश

विभिन्न विषयों पर निर्देश

1. सदैव उत्साहित रहिए ........ 5
2. सदैव विनम्र रहिए ........ 5
3. ध्यानपूर्वक जप कीजिए ........ 6
4. भगवद्धाम वापसी ........ 6
5. श्रीमद्भगवद्गीता ........ 7
6. पुस्तक वितरण ........ 8
7. श्रील प्रभुपाद को प्रसन्न करना ........ 9
8. ब्रह्मचारी जीवन ........ 9
9. भक्त समुदाय ........ 10
10. भयावह स्थिति ........ 11
11. देवतागण श्रीकृष्ण के अधीन हैं ........ 11
12. दृढ़प्रतिज्ञ ........ 12
13. दृढ़संकल्प ........ 12
14. भक्तिपूर्ण क्रियाकलाप ........ 12

15. भक्तिमार्ग ........ 13
16. प्रेममयी सेवा ........ 14
17. कभी निष्क्रिय मत रहिए ........ 14
18. अन्तहीन गुफा ........ 14
19. सभी जीवों को लाभ होता है ........ 15
20. न्यूनतम व्यय ........ 15
21. श्रद्धा और पूर्ण ध्यान। ........ 16
22. आदर्श गृहस्थ ........ 17
23. जीवन हेतु कृष्ण प्रसाद ........ 18
24. निष्काम सेवा कीजिए ........ 18
25. जीवन का लक्ष्य ........ 19
26. गृहस्थ जीवन ........ 20
27. गुरु परम्परा ........ 20
28. गुरुकुल ........ 21
29. कौमार आचरेत् प्राज्ञो ........ 22
30. बहिरंगा (माया) शक्ति ........ 22
31. दीक्षा ........ 23
32. कृष्णभावनामृत ........ 24
33. सदैव श्रीकृष्ण का स्मरण कीजिए ........ 25
34. आश्रम के अन्तर्गत रहना ........ 26

35. विवाह ..................... 26
36. भौतिक योग्यता ..................... 27
37. भौतिक आसक्ति ..................... 27
38. सदैव श्रीकृष्ण पर आश्रित रहिए ..................... 28
39. भौतिक जगत् ..................... 28
40. माया ..................... 29
41. औषधि और आहार ..................... 31
42. सम्बन्धियों द्वारा उत्पन्न बाधाएँ ..................... 31
43. अपराध ..................... 31
44. हमारी वास्तविक स्थिति ..................... 32
45. कृपया दृढ़ प्रतिज्ञ रहिए ..................... 33
46. पवित्रता हेतु अभ्यास ..................... 33
47. प्रसाद वितरण ..................... 33
48. प्रचारक ..................... 34
49. प्रचार का वास्तविक उद्देश्य ..................... 34
50. पवित्रता का सिद्धांत ..................... 36
51. कृष्ण के प्रिय कैसे बनें ..................... 37
52. वास्तविक पथ ..................... 37
53. वास्तविक आनन्द ..................... 38
54. वास्तविक वृन्दावन ..................... 38

55. प्रचार की भावना .................................................................. 38
56. सदैव कृष्णभावनामृत का अभ्यास कीजिए................................ 39
57. आध्यात्मिक उन्नति ................................................................ 40
58. आध्यात्मिक विस्फोटक ......................................................... 41
59. आध्यात्मिक जीवन.................................................................. 41
60. आध्यात्मिक मार्ग.................................................................... 42
61. आध्यात्मिक प्रगति ................................................................. 42
62. निष्ठावान् भक्त ...................................................................... 42
63. कठोर साधना ......................................................................... 43
64. पीड़ित मानवता ...................................................................... 43
65. आध्यात्मिक गुरु का महत्व .................................................... 43
66. शरणागति ............................................................................... 44
67. श्री षड्गोस्वामीवृन्द की शिक्षाएँ ............................................... 44
68. सद्बुद्धि ................................................................................ 45
69. वैष्णव सिद्धान्त..................................................................... 46
70. सहनशीलता............................................................................ 46
71. वैष्णव अपराध ....................................................................... 47
72. प्रतिदिन 24 घंटे सेवा कीजिए ................................................ 47
73. मानवता ................................................................................ 47
74. आध्यात्मिक गुरु ................................................................... 48

75. समर्पण ........................................................................ 48
76. उत्कृष्ट भक्ति ........................................................................ 49
77. अटूट श्रद्धा ........................................................................ 50
78. प्रत्येक क्षण अमूल्य है ........................................................................ 51
79. इन्द्रिय संयम कीजिए ........................................................................ 51
80. श्रील प्रभुपाद के ग्रन्थों को पढ़िए ........................................................................ 52
81. प्रात:कालीन कार्यक्रम का महत्व ........................................................................ 52
श्रील गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज का परिचय........................................................................ 53

# भूमिका

गुरु-मुख-पद्म-वाक्य, चित्ते ते करिया ऐक्य,
आर ना करिह मने आशा।
श्रीगुरु-चरणे रति, एइ से' उत्तम गति,
ये प्रसादे पूरे सर्व आशा।।

श्रीगुरुदेव के मुखारविन्द से निकले हुए दिव्य उपदेशों को हमें अपने हृदय में धारण करना चाहिए, इसके अतिरिक्त अन्य कोई आशा नहीं करनी चाहिए। आध्यात्मिक गुरु के चरणकमलों में आसक्ति भगवद्भक्ति में उन्नति करने का सर्वोत्तम साधन है। उनकी कृपा से आध्यात्मिक सिद्धि प्राप्त करने से सम्बन्धित समस्त अभिलाषाएँ पूर्ण होती हैं।

'दिव्य उपदेश' हमारे प्रिय आध्यात्मिक गुरु परम पूज्य श्रील गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज के मुखकमल से निकली दिव्य शिक्षाओं को सभी भक्तों के लिए उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से किया गया एक विनम्र प्रयास है। इस पुस्तक में उन अमृतमयी शिक्षाओं को संकलित किया गया है जिन्हें गुरु महाराज ने विभिन्न पत्रों के माध्यम से अपने शिष्यों को प्रदान किया।

यह ज्ञात रहे कि गुरु महाराज एक पत्र के द्वारा निर्देश देते हैं, कदाचित् वह निर्देश किसी विशेष काल और विशिष्ट शिष्य के ही व्यक्तिगत प्रश्नों पर आधारित हो। अतः सम्पादन कार्य करते हुए इस सम्बन्ध में विशेष सावधानी बरती गई है कि किसी व्यक्तिगत निर्देश को न छुआ जाय।

इस पुस्तक के माध्यम से हम गुरु महाराज की शिक्षाओं को प्रस्तुत कर रहे हैं ताकि ऐसी शिक्षाओं के द्वारा उनके चरणारविन्दों के प्रति हमारा सेवाभाव और शरणागति बढ़ने में सहायता हो।

हम गुरु महाराज की कृपा हेतु प्रार्थना करते हैं जिसके बिना इन शिक्षाओं का वास्तविक तात्पर्य (सारार्थ) हमारे हृदयों में कदापि प्रकाशित नहीं होगा। विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर कहते हैं–

यस्यप्रसादाद् भगवत्–प्रसादो,
यस्याऽप्रसान्न गतिः कुतोऽपि।।

केवल गुरु की कृपा से ही कृष्ण की कृपा प्राप्त होती है। उनकी कृपा न हो तो कृष्ण की कृपा प्राप्त करना असंभव है। हमें सदैव गुरु की कृपा प्राप्त करने के लिए, 'वपु तथा वाणी' के माध्यम से उनकी सेवा करने में अपने–आपको लगाना चाहिए। ऐसा करने मात्र से ही हम आध्यात्मिक उन्नति कर सकते हैं।

मैं आन्तरिक हृदय से उन सभी भक्तों को धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक के प्रकाशन में सहायता प्रदान की। इस पुस्तक के अनुवाद के लिए मैं आभारी हूँ 'अचिन्त्यतत्त्व प्रभु' का, हिन्दी टंकण (टाईपिंग) एवं रूपरेखा का कार्य अनुत्तम हरि दास के प्रयास से सम्भव हो सका। संपादन का कार्यभार जितामित्र प्रभु और दामोदर प्रिया प्रभु ने संभाला तथा सुन्दर मुख पृष्ठ का कार्य अजयनाथ प्रभु ने किया।

हम श्री श्री राधापार्थसारथी के श्री चरणों में प्रार्थना करते हैं कि वे इन सभी भक्तों को अपना विशुद्ध प्रेम प्रदान करें।



हरे कृष्ण
वैष्णव कृपाभिलाषी
सर्वसाक्षी दास
अगस्त 2009

# शिष्यों के नाम सन्देश

प्रिय शिष्यो,

कृपया मेरा शुभाशीष स्वीकार कीजिए।

मैं यह संदेश सर्वसाक्षी दास के अनुरोध के प्रत्युत्तर में लिख रहा हूँ। मैं जानता हूँ, कि वह शिष्यों के लिए एक छोटी पुस्तक का प्रकाशन कर रहे हैं। मैं आप सभी को आध्यात्मिक प्रगति करते हुए देखना चाहूँगा। आप सभी अत्यंत सौभाग्यशाली हैं क्योंकि आप श्रील प्रभुपादजी के आन्दोलन के सम्पर्क में आए हैं। श्रील प्रभुपाद ने परमसत्य को बहुत सरल रीति से प्रस्तुत किया और उनकी पवित्रता के कारण सम्पूर्ण विश्व में बद्ध-जीवात्माओं ने कृष्णभावनामृत को अंगीकार किया। हम श्रील प्रभुपाद के निर्देशों के विषय में ज्ञान उनके ग्रन्थों, पत्रों एवं वार्तालापों के द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। ध्यानपूर्वक जप करना, नियमित रूप से प्रभुपादजी के ग्रन्थों का अध्ययन करना, भक्तों का संग करना और व्यावहारिक सेवाओं में सहयोग करना, आध्यात्मिक प्रगति करने के मूल मन्त्र हैं। क्योंकि परम भगवान् अपने दिव्य नामों से अभिन्न हैं, अतः हमें बहुत ही ध्यानपूर्वक इन पवित्र नामों का जप करना चाहिए। मैं यह निवेदन करना चाहता हूँ, कि आप अपनी निर्धारित 16 मालाओं का जप प्रातःकालीन समय में

ही पूरा करें। जप करते समय आप जितना अधिक ध्यान देंगे उतनी ही शीघ्रतापूर्वक आप बहिरंगा (माया) शक्ति के दुष्प्रभावों से मुक्त हो सकेंगे।

नियमित रूप से प्रभुपादजी के ग्रन्थों का अध्ययन कीजिए और प्रत्येक सप्ताह अपने क्षेत्र में होने वाले रविवार के कार्यक्रम में भाग लेने का प्रयास कीजिए। 'रविवार के प्रीतिभोज' प्रवचन में भाग लीजिए और यदि सम्भव हो तो सप्ताह में कम-से-कम एक बार श्रीमद्‌भागवतम् प्रवचन का श्रवण कीजिए। व्यावहारिक सेवा करने हेतु भी सदैव आतुर रहिए। नाम हट्ट प्रचार क्रार्यक्रमों का आरंभ कीजिए अथवा अन्य नाम हट्ट कार्यक्रमों में भाग लीजिए। मनुष्य जीवन अत्यन्त दुर्लभ है और किसी भी समय इसका अन्त हो सकता है। अतः उत्साहपूर्वक सेवा कीजिए और कृष्णभावनामृत से उत्पन्न दिव्य आनन्द की अनुभूति कीजिए।

श्रील प्रभुपाद की सेवा में<br>
आपका शाश्वत शुभ चिन्तक<br>
गोपाल कृष्ण गोस्वामी

श्री श्री राधापार्थसारथी मंदिर<br>
नई दिल्ली<br>
अगस्त 2009

# विभिन्न विषयों पर निर्देश

## १. सदैव उत्साहित रहिए

यदि समस्त भक्त एकजुट होकर उत्साहपूर्वक कार्य करेंगे, तो आपके केन्द्र में प्रचार कार्य का विस्तार होगा। भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से एक नेत्रहीन व्यक्ति देख सकता है, बधिर व्यक्ति सुन सकता है और लंगड़ा व्यक्ति ऊँचे पर्वत शिखरों को लाँघ सकता है। हरिनाम के जप और ग्रन्थों के अध्ययन के अतिरिक्त भक्तों को नियमित रूप से व्यावहारिक सेवाओं में भी संलग्न होना चाहिए। अतः आध्यात्मिक मार्ग में स्थिर रहने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ रहिए और आपको जो भी सेवा सौंपी गई है, उसके प्रति सदैव उत्साहित रहिए।

## २. सदैव विनम्र रहिए

कृपया सदैव विनम्र बने रहिए और श्रीकृष्ण आपको अधिकाधिक सेवा प्रदान कर धन्य करेंगे। मुझे यह पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई, कि आप मंदिर में एक कोषाध्यक्ष, टेंपल कमांडर व पुजारी के रूप में कार्य कर रहे हैं। एक कोषाध्यक्ष के रूप में आपको यह सुनिश्चित करना चाहिए, कि श्रीकृष्ण की लक्ष्मी धन का अपव्यय न हो। एक पुजारी के रूप में यह सुनिश्चित करना चाहिए, कि आप अपनी सेवा समयानुसार करें व स्वच्छता के उचित स्तर को बनाये रखें। प्रेममयी सेवा में निमग्न रहकर ही कोई भक्त माया का विरोध कर सकता है। माया का उद्देश्य है, सदैव आपको आध्यात्मिक पद से विचलित करने का प्रयास करना। अतः सदैव सावधान रहिए।

## ३. ध्यानपूर्वक जप कीजिए

मुझे आपकी प्रतिज्ञा के विषय में पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई, आपने संकल्प किया है कि आप आध्यात्मिक गुरु के चरण-कमलों पर दृढ़तापूर्वक आश्रित रहेंगे, चाहे यह कितना भी कठिन क्यों न हो। यही वास्तविक बुद्धिमत्ता है, जिसे प्रत्येक भक्त को बनाए रखना चाहिए। श्रीकृष्ण यह आश्वासन देते हैं, कि जो भक्त सदैव उनका स्मरण करेगा उनके द्वारा बताए पथ का अनुसरण करेगा वह निश्चित रूप से श्रीभगवान् के परम धाम को वापस जाएगा। प्राय: भक्त की परीक्षा ली जाती है और आप श्रीमद्भागवतम् में पढ़ते हैं, कि किस प्रकार श्रील नारद मुनि ध्रुव महाराज की परीक्षा लेते हैं। अत: यदि आप अपने आध्यात्मिक गुरु का अनुसरण करने हेतु कृतसंकल्प हैं, तब न तो आप कभी विचलित होंगे और न ही कभी पथभ्रष्ट होंगे। जब भक्त संकटग्रस्त होता है, तो वह और अधिक गहनता से अपने आध्यात्मिक गुरु और श्रीकृष्ण का ध्यान करता है और वह किसी प्रकार से हतोत्साहित नहीं होता। भक्ति में दृढ़संकल्प और स्थिर बनने का सामर्थ्य भगवान् श्रीकृष्ण के पवित्र नामों का ध्यानपूर्वक जप करने से ही प्राप्त होगा। अत: कृपया पूर्ण मनोयोग से अपनी 16 मालाओं का जप कीजिए और प्रतिदिन कम-से-कम एक घंटा ग्रन्थों का अध्ययन कीजिए और जितना अधिक-से-अधिक हो सके आप मन्दिर भी जाइये।

## ४. भगवद्धाम वापसी

आपको एक आदर्श उदाहरण स्थापित करना होगा। हमारा सिद्धांत है, आचरण के द्वारा प्रचार। यदि हम चाहते हैं कि अन्य भक्त, भक्ति के किसी निश्चित स्तर का अनुसरण करें तो हमें अपने आचरण द्वारा दिखाना पड़ेगा कि किस प्रकार यह स्तर बनाए रखा जाय। क्योंकि आप एक निष्ठावान और दृढ़-प्रतिज्ञ भक्त है, श्रीकृष्ण धीरे-धीरे आपको अधिकाधिक उत्तरदायित्व

सौंप रहे हैं। जब आप किसी विशेष पद के प्रति अपना उत्तरदायित्व निभा रहे हों, तो कृपया किसी प्रकार की आलोचना होने पर हतोत्साहित न हों। जब आपको कोई उत्तरदायित्व प्रदान किया जाएगा तो आलोचना तो होगी ही। कुछ लोग आपको पसंद करेंगे और कुछ लोग नापसंद, परन्तु आपको इससे कोई सरोकार नहीं होना चाहिए। आपका नैतिक उद्देश्य तो यह होना चाहिए कि आप कठोरता से आध्यात्मिक विधि-विधानों का पालन करें और वरिष्ठ भक्तों के निर्देशों का विनम्र वैष्णव विधि से पालन करें। सभी वैष्णवों से कोमल और मित्रवत् व्यवहार कीजिए, उनसे सेवा में जुड़ने हेतु याचना कीजिए और प्रेम एवं आर्दश व्यवहार के द्वारा उनका सहयोग जीत लीजिए। अपनी मालाओं का ध्यानपूर्वक जप करने और प्रभुपादजी के ग्रन्थों का अध्ययन करने से पवित्रता उत्पन्न होगी और पवित्रता आपको अधिकाधिक उत्साहित होने के लिए प्रेरित करेगी।

भगवद्धाम वापस जाना आपका प्राथमिक कर्तव्य है। अतः जिस प्रकार श्रील रूप गोस्वामीजी ने कहा है, इस प्रमुख लक्ष्य से समझौता करने से सम्बन्धित समस्त कार्यों को त्याग देना चाहिए। फिर भी क्योंकि आप एक गृहस्थ हैं, आपकी पत्नी एवं बच्चे है, आपको उनकी समुचित देखभाल करनी चाहिए, परन्तु संबन्धियों के लिए कृष्णभावनामृत का महत्व समझना अत्यन्त कठिन है, विशेषतः तब, जब वे स्वयं कृष्णभावनामृत का अभ्यास न कर रहे हों।

## ५. श्रीमद्भगवद्गीता

मुझे आपकी कृष्णभावनाभावित बनने की उत्कट तीव्र इच्छा के विषय में जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। श्रीकृष्ण श्रीमद्भगवद्गीता में समझाते हैं, कि लाखों बार जन्म लेने और मृत्यु होने के उपरान्त कोई सौभाग्यशाली आत्मा ही यह साक्षात्कार कर पाता है कि श्रीकृष्ण ही समस्त कारणों

के परम कारण हैं। श्रीमद्भगवद्गीता का अध्ययन करके श्रीकृष्ण की इच्छा को समझा जा सकता है। इस लोक से परम भगवान् के प्रयाण के पश्चात् अर्जुन ने श्रीमद्भगवद्गीता की शिक्षाओं का स्मरण करके महान आनन्द की अनुभूति की। श्रीमद्भगवद्गीता का बार-बार अध्ययन कीजिए। श्रीमद्भगवद्गीता के प्रत्येक श्लोक में अत्यन्त सशक्त संदेश समाहित है और आपको पूर्ण मनोयोग से श्रील प्रभुपादजी के तात्पर्यों का अध्ययन करना चाहिए क्योंकि तात्पर्यों में प्रभुपादजी ने वास्तिविक वैष्णव सिद्धान्तों की बहुत उत्तम व्याख्या की है। मैं यह जानकर हर्षित हुआ कि आप प्रतिदिन 16 मालाओं का जप कर रहे हैं। हरे कृष्ण महामंत्र का जप सर्वथा अनिवार्य है। जिस प्रकार एक बालक अपनी माता के लिए रोता है यह महामंत्र का जप परम पिता के लिए किया जाने वाला रुदन है। शास्त्रों का सुझाव है कि जप अत्यन्त ध्यानपूर्वक किया जाना चाहिए और हमें सदैव दस नाम अपराधों से बचने का प्रयत्न करना चाहिए।

## ६. पुस्तक वितरण

मुझे यह पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आप 'पुस्तक वितरण मैराथन' में भाग ले रहे हैं। श्रील प्रभुपाद पुस्तक वितरण को सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्रिया समझते थे। वैष्णव को प्रचार करने की इच्छा विकसित करनी चाहिए। वैष्णव जब यह देखता है कि अन्य जीव भौतिक जगत् में कष्ट झेल रहे हैं, तो वह उनके प्रति उदासीन नहीं रह सकता। अतः प्रचार करने की भावना का अवश्य ही विकास करना चाहिए। इन पुस्तकों का वितरण करके हम श्रील प्रभुपाद को अज्ञान के अंधकार में डूबी जनता को प्रचार करने का सुअवसर प्रदान करते हैं। सम्पूर्ण विश्व में लोग श्रील प्रभुपादजी के ग्रन्थों की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे हैं। सम्पूर्ण मानवता ने भगवद्विज्ञान का ऐसा सशक्त प्रस्तुतिकरण, इतिहास में पहले कभी नहीं देखा।

पुस्तक वितरण में एकाग्र होकर निमग्न होने की दृढ़ता ध्यानपूर्वक जप करने तथा श्रवण करने से प्राप्त होगी। क्योंकि हरे कृष्ण महामंत्र पूर्णतः आध्यात्मिक है, अतः नाम जप कभी थकाने वाली क्रिया प्रतीत नहीं होती। इस भौतिक संसार में हम केवल चबाए गए नीरस भोगों को चबा रहे हैं, उन्हें थूक रहे हैं, पुनः उठा रहे हैं और फिर से चबाने का यत्न कर रहे हैं। परन्तु दूसरी ओर आध्यात्मिक विविधता है जो निरन्तर सम्वर्द्धित होती रहती है।

## ७. श्रील प्रभुपाद को प्रसन्न करना

पुस्तक वितरण से शुद्धिकरण होता है और यह ऐसी गतिविधि है जो श्रील प्रभुपाद को अति आनन्द प्रदान करती है। मैं जानता हूँ, कि आप एक गम्भीर भक्त हैं, अतएव मैं चाहूँगा कि आप जीवन के परम लक्ष्य 'श्रीकृष्ण प्रेम' को प्राप्त करने हेतु दृढ़ संकल्प करें। यह महत्वपूर्ण विषय नहीं कि भक्त के पास पुरुष देह है अथवा स्त्री का देह। सर्वाधिक महत्वपूर्ण विषय यह है कि भगवान् की प्रेममयी सेवा में संलग्न हुआ जाए।

## ८. ब्रह्मचारी जीवन

मुझे यह पढ़कर अत्यन्त हर्ष हुआ कि आप ब्रह्मचारी आश्रम में स्थिर रहने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ हैं। निःसन्देह ब्रह्मचारी जीवन आध्यात्मिक उन्नति करने हेतु सर्वथा शुभ है। अतः कृपया कृतसंकल्प रहिए। मैं आपके प्रतिदिन मंगल आरती में जाने के नियम की भी सराहना करता हूँ। आप ऐसे अकेले भक्त नहीं हैं, जिसका मन विचलित होता है। ध्यानपूर्वक जप करना, अध्ययन करना तथा भली प्रकार सेवा करने से हमें अशांत मन को नियन्त्रित करने में सहायता मिलेगी।

## ९. भक्त समुदाय

यदि भक्त की अपने आध्यात्मिक गुरु एवं श्रीकृष्ण में अटूट श्रद्धा है केवल तभी उसके हृदय में सम्पूर्ण वेदों का वास्तविक तात्पर्य प्रकाशित होगा। अतः कृपया सदैव दृढ़ विश्वास बनाए रखिए और श्रीकृष्ण आपको सर्वाधिक भयावह स्थितियों से भी उबार लेंगे।

अब जबकि आप दीक्षित हो चुके हैं और आपके भक्त समुदाय के कुछ अन्य सदस्यगण भी दीक्षित हो गए हैं, आप सभी को एक जुट होकर सेवा करनी चाहिए और भक्त समुदाय को श्रील प्रभुपाद द्वारा निर्धारित आध्यात्मिक मानकों (स्तरों) का अनुसरण करने हेतु आकृष्ट करना चाहिए। अमरीका में प्रचार के समुचित अवसर हैं और वहाँ स्थित अधिकांश भारतीय, बहिरंगा शक्ति के प्रभाव से इस प्रकार भ्रमित हुए हैं कि वे आत्मसाक्षात्कार के विषय में सोच भी नहीं सकते। फिर भी जो भक्त समुदाय मन्दिरों में दर्शन हेतु आ रहे हैं वे अधिक भाग्यशाली हैं, परन्तु उन्हें भी प्रचार की आवश्यकता है। इस प्रचार कार्य हेतु सर्वोत्तम भक्त आप जैसे गृहस्थ ही हैं। इसका कारण अत्यन्त सरल है, यदि भक्त समुदाय यह देखते हैं कि गृहस्थ भक्त पूर्ण मनोयोग से 16 मालाओं का जप कर रहे हैं, सभी आध्यात्मिक नियमों का पालन कर रहे हैं और साथ ही साथ अपने परिवार का भी भरण-पोषण कर रहे हैं, अपना व्यवसाय कर रहे हैं तब वे भी उनके द्वारा स्थापित आदर्शों का अनुसरण करने हेतु प्रेरित होंगे। सौभाग्य से आपकी पत्नी भी कृष्णभावनामृत के प्रति समर्पित है। आप दोनों को सप्ताह में कुछ दिन प्रचार के लिए अन्य गृहस्थों के घर जाना चाहिए। श्रील प्रभुपाद की यह तीव्र इच्छा थी कि वे भारतीयों को अपनी आध्यात्मिक संस्कृति के प्रति जागरुक होते देखें। दुर्भाग्यवश हमारे भारतीय भक्त कृष्णभावनामृत में जुड़ने के पश्चात् केवल धन अर्जित

करने की इच्छा ही विकसित करते हैं और इस कारण प्रचार के लिए अपनी पूर्णरूपेण प्रतिबद्धता से पथभ्रष्ट हो जाते हैं।

यदि आप सभी दीक्षित गृहस्थ भक्त स्थानीय मन्दिर की सहायता करेंगे तो मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूँगा। प्रचार के द्वारा सब कुछ संभव होगा। श्रीकृष्ण की कृपा कैसे प्राप्त होगी? इस प्रकार सन्देह नहीं करना चाहिए। परम भगवान् केवल हमारा दृढ़संकल्प व कर्तव्यनिष्ठा चाहते हैं। कृपया अपनी मालाओं का ध्यानपूर्वक जप कीजिए और जितना अधिक हो सके अपना समय स्वाध्याय व प्रचार करने में लगाइये।

## १०. भयावह स्थिति

इस भौतिक जगत् में हम सभी अत्यन्त भयावह स्थिति में हैं। अतः भक्त को आध्यात्मिक पथ पर चलते हुए पूर्णतः सतर्क रहना चाहिए। महाराज भरत ने अपनी धन-सम्पत्ति, सुन्दर पत्नियों व बच्चों को त्याग दिया, परन्तु दुर्भाग्यवश वे एक हिरण के प्रति आसक्त हो गए और उन्हें हिरण के रूप में जन्म लेना पड़ा। महत्वपूर्ण विषय यह है कि हमें आध्यात्मिक मार्ग से पथभ्रष्ट नहीं होना चाहिए।

## ११. देवतागण श्रीकृष्ण के अधीन हैं

श्रीकृष्ण पूर्ण पुरुषोत्तम परम भगवान् हैं और सभी देवतागण परम भगवान् के अधीन हैं। जिस प्रकार किसी वृक्ष की जड़ों में जल डालने पर समस्त शाखाएँ भी पोषित हो जाती हैं, उसी प्रकार श्रीकृष्ण की भक्ति करने से सभी देवी-देवता पूर्णतः संतुष्ट हो जाते हैं। अतः सम्पूर्ण वेदों का निष्कर्ष यही है कि भक्त को सदैव पूर्ण पुरुषोत्तम परम भगवान् श्रीकृष्ण पर ही एकाग्रचित्त रहना चाहिए जो वास्तविक आनन्द और सुख के आधार एकमात्र हैं। शिष्य अपने आध्यात्मिक गुरु की आज्ञाओं का पालन करते

हुए सदैव उनका संग प्राप्त करता है। इसलिए सदैव हरेकृष्ण महामंत्र का जप कीजिए, श्रीकृष्ण का स्मरण कीजिए, श्रीकृष्ण की प्रेमपूर्वक सेवा कीजिए, और इस प्रकार आप भगवद्धाम वापस जा सकेंगे।

## १२. दृढ़प्रतिज्ञ

आपकी तीव्र इच्छा है कि आप प्रचार करें और श्रीकृष्ण आपको अधिक-से-अधिक सुअवसर प्रदान कर रहे हैं। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि आपके देश में बुद्धिजीवी वर्गों को प्रचार किया जाए। यह हमारे आन्दोलन की विश्वसनीयता को स्थापित करने में सहायता करेगा। आप बस दृढ़प्रतिज्ञ, धैर्यवान और विनम्र बने रहिए और उन्हीं शिक्षाओं को दोहराइये जिनका आपने अपने आध्यात्मिक गुरु एवं श्रील प्रभुपाद से श्रवण किया है। इस प्रकार आप कभी गलती नहीं करेंगे।

## १३. दृढ़संकल्प

आप एक अत्यंत गम्भीर भक्त प्रतीत होते हैं और मुझे आशा है कि आप सदैव आध्यात्मिक मार्ग पर दृढ़संकल्प होकर स्थिर रहेंगे। आध्यात्मिक उन्नति के लिए दृढ़संकल्प परमावश्यक है और चाहे बहुत सी कठिनाइयाँ आएँ, जो निश्चित रूप से आयेंगी ही, आप कभी सेवा से पीछे नहीं हटना। सर्वदा विनीत भाव बनाए रखना और अन्य भक्तों को आदर प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहना। इस प्रकार आप कभी त्रुटि नहीं करेंगे।

## १४. भक्तिपूर्ण क्रियाकलाप

आपको आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करके मुझे बहुत प्रसन्नता होगी। मेरा यह सुझाव है कि आपको कृष्णभावनामृत के प्रति बहुत गम्भीर होना चाहिए। लाखों बार जन्म और मृत्यु के चक्र से कष्ट भुगतने के उपरान्त किसी सौभाग्यशाली आत्मा को ही प्रेमाभक्ति के पथ पर निर्देशित किया

जाता है। अब महत्वपूर्ण विषय यह है कि इस मार्ग पर निश्चयपूर्वक स्थिर बने रहा जाए। कई बार हम अत्यन्त उत्साहपूर्वक आध्यात्मिक जीवन को स्वीकार करते हैं और कुछ समय बाद हम निर्बल और शिथिल हो जाते हैं। यदि कोई भक्त सतर्कतापूर्वक कृष्णभावनामृत की विधियों का पालन कर रहा है तो कभी निर्बल होने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। कृपया पूरी सक्रियता से स्वयं को भक्तिपूर्ण क्रियाकलापों में व्यस्त रखिए। प्रभुपादजी चाहते थे कि हम सेवा में पूरी तरह निमग्न रहें ताकि माया के लिए कोई समय शेष न रहे। 'खाली दिमाग शैतान का घर होता है' इसलिए कृपया एक क्षण के लिए भी निष्क्रिय न रहिए।

## १५. भक्तिमार्ग

मैंने आपको अनेक बार यह समझाया है कि इतना अधिक कठोर परिश्रम न कीजिए कि आपके पास आध्यात्मिक गतिविधियों के लिए समय ही शेष न रहे। जीवन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य है, आध्यात्मिक विधि-विधानों का निष्ठापूर्वक पालन करना। भक्ति-मार्ग में सभी भक्तों को यह स्वतत्रंता प्राप्त है कि वे अपने गुरुदेव की आज्ञाओं का पूरी तरह पालन करें या उन्हें त्याग दें अथवा उनका आंशिक ही पालन करें। उसी प्रकार जैसे प्रत्येक व्यक्ति को यह स्वतत्रंता प्राप्त है कि वह श्रीकृष्ण की शिक्षाओं का पालन करे अथवा न करे। श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण स्पष्ट रूप से कहते हैं, कि वे भक्त की शरणागति के आधार पर ही उससे प्रेम का आदान-प्रदान करते हैं।

श्रीचैतन्य महाप्रभु ने यह परामर्श दिया कि यदि भक्त आध्यात्मिक प्रगति करना चाहता है तो उसे विनम्रता के चरमोत्कर्ष को पाने का अभ्यास करना होगा। विनम्रता का अर्थ है कि स्वयं को पूर्णतः मूर्ख स्वीकार कर लिया जाए और तत्पश्चात् गुरु साधु, एवं शास्त्रों से आध्यात्मिक मार्गदर्शन हेतु भिक्षा माँगी जाए।

## १६. प्रेममयी सेवा

लाखों बार जन्म और मृत्यु के कष्ट सहने के पश्चात् किसी भाग्यशाली जीवात्मा को वैष्णवों के साथ परिक्रमा करने हेतु जाने का सुअवसर प्राप्त होता है। यह भौतिक शरीर तो सदैव कष्ट ही देगा, इसलिए कृपया व्यथित मत होइये। कृष्णभावनाभावित बनना ही हर समस्या का सर्वोत्तम समाधान है। श्रील रूप गोस्वामी हमें यह उपदेश देते हैं कि जैसे-जैसे हम प्रेममयी सेवा करेंगे, हमारे अनर्थ नष्ट होने लगेंगे और भगवान् के पवित्र नामों का जप एवं गुरुदेव तथा श्रीकृष्ण की प्रेमपूर्वक सेवा करने के प्रति हमारी कर्तव्य-निष्ठा और श्रद्धा बढ़ने लगेगी।

मुझे आशा है कि आप अपनी निर्धारित मालाओं का जप और नियमित रूप से अध्ययन कर पा रहे हैं। आप प्रभुपाद के विषय में जितना अधिक अध्ययन करेंगे उतना अधिक आप अनुभव करेंगे कि वे कितने महान हैं।

## १७. कभी निष्क्रिय मत रहिए

हम महान आचार्यों द्वारा प्रदान की गई आध्यात्मिक प्रक्रियाओं का अनुसरण करते हुए श्रीकृष्ण हेतु अपने सुषुप्त प्रेम को जाग्रत कर सकते हैं। यह प्रक्रिया अत्यन्त सरल है, हरेकृष्ण महामन्त्र का जप कीजिए, भक्तों का संग कीजिए और जितनी सम्भव हो अधिकाधिक सेवा कीजिए। कृपया स्वयं को भक्तिपूर्ण क्रियाओं में व्यस्त रखिए और एक क्षण के लिए भी निष्क्रिय मत रहिए।

## १८. अन्तहीन गुफा

श्रील प्रभुपाद के ग्रन्थों का बारम्बार अध्ययन करना चाहिए। श्रील प्रभुपाद के ग्रन्थ अन्तहीन गुफाओं की तरह हैं, जिनकी आध्यात्मिक गहराई का अन्त कभी देखा नहीं जा सकता। आप बहुत भाग्यशाली हैं कि आपके पास अध्ययन करने के लिए एक उपयुक्त स्थान है। एक मुख्य समस्या

यह है, कि अधिकांश भक्तों के पास अध्ययन करने हेतु उचित स्थान नहीं है। जिस प्रकार जिह्वा स्वाभाविक रूप से प्रसाद की ओर आकृष्ट होती है, उसी प्रकार हमारे कानों को भी परम भगवान् के पवित्र नामों और उनके दिव्य संदेशों के प्रति आकर्षित होना चाहिए। मैं सदैव शिष्यों को विग्रह-पूजन के लिए समर्पित रहने हेतु उत्साहित करता हूँ।

## १९. सभी जीवों को लाभ होता है

सबसे महत्वपूर्ण विषय है कि ग्रन्थों का अध्ययन किया जाए। यह अधिक महत्वपूर्ण नहीं कि आप श्रील प्रभुपाद के ग्रन्थों को अकेले पढ़ें या अपने पति के साथ पढ़ें। ग्रन्थों के अध्ययन से आपको आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होगी और साथ ही आपकी बुद्धि भी कुशाग्र बनेगी। क्योंकि आपके पति भी कृष्णभावनाभावित हैं, अतः आप दोनों को श्रीचैतन्य महाप्रभु के आन्दोलन को आगे बढ़ाने हेतु परस्पर सहयोग करना चाहिए। भगवान् श्रीचैतन्य समस्त पतित आत्माओं का उद्धार करना चाहते हैं। इसलिए हमें परम भगवान् की अभिलाषा को पूर्ण करने के लिए परिश्रम करना होगा। आप और आपके पति बहुत अच्छे पुस्तक वितरक हैं। आप अपनी ओर से भरसक प्रचार कीजिए ताकि अधिक-से-अधिक लोग इन ग्रन्थों को पढ़ें। प्रचार के द्वारा सभी जीवों का कल्याण होता है। आपको अपना जप भी ध्यानपूर्वक करना चाहिए और भक्तों का नियमित रूप से संग करना चाहिए क्योंकि संग के बिना आध्यात्मिक उन्नति करना बहुत ही कठिन है।

## २०. न्यूनतम व्यय

मझे बहुत प्रसन्नता है कि आप प्रसाद वितरण की सेवा कर रहे हैं और दस अन्य परिवार भी हैं, जो सक्रिय रूप से कृष्णभावनामृत का अभ्यास कर रहे हैं। इस समय आपको अपने व्ययों (खर्चों) को न्यूनतम रखना

चाहिए। भविष्य में जैसे-जैसे विस्तार कार्य होगा तब आप उन्नत सुविधाएँ प्राप्त कर सकते हैं। और जैसे मैं सदैव यह कहता हूँ, कि पूर्ण मनोयोग से अपनी मालाओं का जप कीजिए और पूरी सावधानी से प्रेममयी सेवा कीजिए।

प्रह्लाद महाराज गृहमेधी के जीवन की दुःखद स्थिति की तुलना एक अन्धकूप से करते हैं। अतः गृहस्थ आश्रम में रहते हुए भक्त को अत्यन्त सतर्क रहना चाहिए, यदि वह वास्तव में भगवद्धाम वापस जाने का इच्छुक है। कृपया सदैव अपनी मालाओं का जप ध्यानपूर्वक कीजिए और श्रील प्रभुपाद जी के ग्रन्थों का अध्ययन भी कीजिए। जितना अधिक आप अध्ययन करेंगे उतनी ही आपकी बुद्धि कुशाग्र बनेगी और आप आध्यात्मिक दृष्टि से शक्तिशाली बन जाएँगे।

## २१. श्रद्धा और पूर्ण ध्यान।

आप जैसे-जैसे प्रेममयी सेवा का निष्पादन करेंगे, प्रेमाभक्ति की विभिन्न प्रक्रियाओं के प्रति आपकी श्रद्धा का विकास होगा। अंग्रेजी भाषा में एक कहावत है 'निरन्तर अभ्यास द्वारा व्यक्ति पूर्णता को प्राप्त करता है।' श्रील रूप गोस्वामी उपदेश देते हैं, कि आध्यात्मिक गुरु की आज्ञाओं का पालन करने से हमारी श्रद्धा सघन होती है और हम निष्ठा के स्तर पर आ जाते हैं। आध्यात्मिक गुरु की प्रमुख आज्ञा यही है, कि प्रतिदिन सदैव हरेकृष्ण महामन्त्र की कम से कम 16 माला जप कीजिए। प्रतिदिन श्रील प्रभुपाद के ग्रन्थों का कम से कम एक घंटा अध्ययन कीजिए और व्यावहारिक सेवाओं में भी भाग लीजिए। आपने यह उल्लेख भी किया है कि आप श्रीकृष्ण का स्मरण करने में असमर्थ हैं। हरेकृष्ण महामंत्र का सावधानीपूर्वक जप करके आप भगवान् का ध्यान कर सकते हैं। वास्तव में हरेकृष्ण महामन्त्र का जप करके हम परम भगवान् से यह

प्रार्थना करते हैं कि वे कृपा करके हमें अपनी प्रेमाभक्ति में लगाएँ। जब तक हम नियमित रूप से पूरी श्रद्धा और पूर्ण मनोयोग से जप नहीं करते, तब तक आध्यात्मिक उन्नति करना पूर्णतः असम्भव है। यदि आप पर काम का अधिक बोझ है तो अपने कार्य को थोड़ा सा घटा दीजिए ताकि आप बिना किसी बाधा के नियमित रूप से अपनी 16 मालाओं का जप कर सकें। यदि आप भगवत्प्रेम विकसित करना चाहते हैं, तो आपको निश्चित रूप से प्रयास तो करना ही पड़ेगा। मुझे आशा है कि आप मेरे सुझावों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे और अपनी समय-सारणी को इस प्रकार व्यवस्थित करेंगे कि आप अपनी निर्धारित मालाओं का ध्यानपूर्वक जप कर सकें।

आपको अपनी आध्यात्मिक प्रगति हेतु मेरा शुभाशीष। मैं जानता हूँ कि आप गम्भीर हैं और यदि आप आध्यात्मिक गुरु में अटूट श्रद्धा बनाए रखेंगे तो आप निश्चित रूप से आध्यात्मिक उन्नति करेंगे।

## २२. आदर्श गृहस्थ

मुझे हाल ही में आपका पत्र और आपके विवाह का निमन्त्रण प्राप्त हुआ। मुझे आशा है कि आप दोनों पति-पत्नी के रूप में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे और सभी परिस्थितियों में परम भगवान् की सेवा में संलग्न रहेंगे। गृहस्थ जीवन से सम्बन्धित कुछ पुस्तकें हैं जो गृहस्थों के बारे में कहे गये श्रील प्रभुपाद के उद्धरणों पर आधारित हैं और मैं आप दोनों को यह परामर्श देता हूँ कि आप श्रील प्रभुपाद के द्वारा गृहस्थों को दिये जाने वाले सुझावों के विषय में अवश्य ही पढ़िए।

कृपया नियमित रूप से अपनी मालाओं का जप कीजिए और जितनी बार हो सके मन्दिर अवश्य जाइये। यह अतीव आवश्यक है कि आप प्रेममयी सेवा में निमग्न रहें। और मास में एक बार मुझे पत्र लिखने

का भी प्रयास कीजिए, चाहे आपको मेरी ओर से उत्तर न भी मिले, और ब्राह्मण दीक्षा के सम्बन्ध में जैसे कि मैं पहले भी कह चुका हूँ, मैं सैद्धान्तिक रूप से इसके विरुद्ध नहीं हूँ। परन्तु फिर भी मेरा यह परामर्श है कि आप कुछ समय तक प्रतीक्षा कीजिए। मुझे यह पढ़कर अत्यन्त हर्ष हुआ कि आप में विग्रहों की सेवा करने और विग्रहों हेतु भोग पकाने की तीव्र इच्छा है और मुझे विश्वास है कि उचित समय आने पर श्रीकृष्ण आपकी ब्राह्मण दीक्षा लेने सम्बन्धी पूरी व्यवस्था कर देंगे।

एक आदर्श गृहस्थ की भाँति व्यवहार कीजिए और श्रीकृष्ण की प्रसन्नता हेतु कार्य कीजिए। कृपया आश्वस्त रहिए कि श्रीकृष्ण की प्रेमपूर्वक सेवा के अतिरिक्त अन्य कोई कार्य आपको प्रसन्न नहीं कर सकता।

## २३. जीवन हेतु कृष्ण प्रसाद

जीवन हेतु कृष्ण प्रसाद कार्यक्रम ऐसी आध्यात्मिक गतिविधि है जो कलियुग में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कार्यक्रम बहुत व्यापक स्तर पर जन सम्पर्क बढ़ा रहा है। यदि आप भक्ति सम्बन्धी सेवाओं में सक्रिय रूप से भाग लेंगे तो मुझे बहुत प्रसन्नता होगी। 'खाली दिमाग शैतान का घर होता है।' स्वयं को पूरी तरह भक्तिपूर्ण सेवाओं में निमग्न रखिए और इस प्रकार आप सदैव प्रसन्न रहेंगे?

## २४. निष्काम सेवा कीजिए

यदि आप जैसे गम्भीर और उत्तरदायित्व समझने वाले भक्त आदर्श आचरण प्रस्तुत नहीं करेंगे तो अनुभवहीन छोटे भक्त किस प्रकार आध्यात्मिक प्रगति करेंगे।

जब हम इस्कॉन में आते हैं तब हमें कृष्णभावनामृत आन्दोलन के हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए अपनी स्वार्थी मानसिकता को त्याग

देना चाहिए। आपके जीवन का एकमात्र उद्देश्य अपने आध्यात्मिक गुरु के निर्देशानुसार सेवा करना होना चाहिए यह नहीं कि आप अपने गुरुदेव पर यह दबाव डालें कि वे किसी विशिष्ट स्थान पर ही स्थित रहने सम्बन्धी आपकी इच्छा को स्वीकार करें।

## २५. जीवन का लक्ष्य

घर में आपकी स्थिति के कारण मैं आपकी चिन्ता समझता हूँ। यह असामान्य नहीं हैं कि भक्तों को कितना कष्ट झेलना पड़ता है। आप यह कभी मत भूलिए कि भगवान् श्रीकृष्ण आपके हृदय में हैं और आपकी इच्छा के अनुरूप वे आपको संरक्षण और मार्गदर्शन प्रदान करेंगे। इसलिए कृपया सुदृढ़ बने रहिए। भगवान् का पवित्र नाम ही सर्वाधिक मूल्यवान सम्पत्ति है तथा भगवान् श्रीकृष्ण को प्रसन्न करना ही जीवन का वास्तविक लक्ष्य है। समय-समय पर श्रीकृष्ण आपकी परीक्षा लेंगे। मुझे प्रसन्नता है कि आपकी बहन भी आध्यात्मिक पथ पर बने रहने के लिए अत्यन्त उत्साहित है और मैं भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि आप दोनों आध्यात्मिक उन्नति करें ताकि आपको जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य प्राप्त हो सके। जप और अध्ययन के साथ जब भी सम्भव हो आप मन्दिर जाइये। धर्म का अर्थ होता है भगवान् के प्रति प्रेम एवं पापकर्मों से विरक्ति। महामन्त्र परम भगवान् व उनकी प्रियतमा भक्त श्रीमती राधरानी के प्रति सम्बोधन है।

श्रील नारद मुनि भगवान् के शक्त्यावेशित भक्त हैं। हमारे स्वप्न पूर्वजन्मों में तथा भूतकाल में हमारे किए गये कार्यों का प्रतिबिम्ब हैं। चतुर्थ स्कन्ध में श्रील प्रभुपाद स्पष्ट करते हैं कि स्वप्न में आप यदि ऐसे व्यक्ति को देखें जो आपको इस जीवन में न मिला हो तो वह अवश्य ही आपको पूर्वजन्म में मिला होगा। प्रभुपाद चाहते थे, कि गाँधीजी भी गीता का प्रचार करें किन्तु दुर्भाग्य से वे राजनीतिक गतिविधियों में बहुत निमग्न थे।

## २६. गृहस्थ जीवन

कृष्णभावनामृत के अन्तर्गत हुए विवाहों में पति व पत्नी श्रीकृष्ण को प्रसन्न करने के उद्देश्य से एक साथ रहते हैं, अपनी इन्द्रियों को तुष्ट करने की भावना से नहीं। गृहस्थों को यह अनुमति है कि वे समझते हुए बच्चों को जन्म दें कि उन्हें परम भगवान् की सेवा में लगाया जाएगा। कृष्णभावनाभावित गृहस्थ आश्रम में भी अवैध यौन जीवन पूर्णतः निषिद्ध है। तब यह गृहस्थ जीवन नही कहलाएगा, बल्कि गृहमेधी जीवन बन जाएगा।

धर्म के मूल स्तम्भों रूपी चार नियमों का पालन प्रत्येक भक्त को करना चाहिए, चाहे वह ब्रह्मचारी आश्रम में है अथवा एक गृहस्थ भक्त की स्थिति में है।

## २७. गुरु परम्परा

मैं यह जानकर बहुत प्रसन्न हुआ कि आप आध्यात्मिक गुरु के साथ अपने घनिष्ठ सम्बन्ध को समझते हैं। आध्यात्मिक गुरु से घनिष्ठ सम्बन्ध ही सुदृढ़ आध्यात्मिक जीवन का आधार है। आध्यात्मिक गुरु का एकमात्र कर्तव्य है कि वे अपने आचरण के द्वारा प्रचार करें और गुरु-परम्परा से प्राप्त शिक्षाओं को यथारूप अपने शिष्यों को प्रदान करें। शिष्य का दायित्व है, कि वह यह समझे कि वह सबसे बड़ा मूर्ख है, और इस प्रकार विनम्रतापूर्वक अपने आध्यात्मिक गुरु के दिशानिर्देशों को स्वीकार करके आध्यात्मिक उन्नति करे। आप एक कर्तव्यनिष्ठ आत्मा हैं और मैं जानता हूँ कि आप अपनी ओर से भरसक प्रयास कर रहे हैं।

भगवान् श्रीचैतन्य महाप्रभु की अहैतुकी कृपा के कारण इस युग में आत्मसाक्षात्कार की प्रक्रिया अत्यन्त सरल बन गई है। किसी भी प्रकार से हमें भगवान् के पवित्र नामों का जप करने के प्रति आसक्ति उत्पन्न

करनी चाहिए। परम भगवान् के पवित्र नामों को 'श्रवण-मंगल' कहा जाता है। इसका अर्थ है कि भक्त केवल भगवान् के पवित्र नामों के श्रवण मात्र से सभी प्रकार के शुभ व मंगलकारी फलों को प्राप्त करता है। श्रीमद्भागवतम् में भगवान् के पवित्र नामों का पुण्य-श्रवण-कीर्तन के रूप में वर्णन किया गया है। भगवान् के विषय में श्रवण करना व उनका कीर्तन करना सभी प्रकार से सर्वोच्च पुण्य का कार्य है। हरेकृष्ण महामन्त्र का जप करना सबसे महानतम वरदान है। अतः कृपया यह नियम बनाएँ कि आप प्रतिदिन अपनी मालाओं का जप करें, यह भी सुनिश्चित करें कि आप ध्यानपूर्वक उनका जप कर रहे हैं। भगवान् के पवित्र नामों के जप का पूर्णरूपेण लाभ प्राप्त करने हेतु यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम ध्यानपूर्वक जप करें और दस नाम अपराधों से सदैव बचें। महामन्त्र का जप करने से केवल जापक के ही हृदय का शुद्धिकरण नही होता, अपितु अन्य कोई भी जीव, जो इस दिव्य शब्द ध्वनि का श्रवण करता है, उसका हृदय भी निर्मल हो जाता है। यदि आप नियमित रूप से जप करेंगे और श्रील प्रभुपाद जी के ग्रन्थों का अध्ययन करेंगे तो कृष्णभावनामृत की प्रक्रिया के प्रति आपकी श्रद्धा सदैव सुदृढ़ बनी रहेगी।

## २८. गुरुकुल

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि आप गुरुकुल में आनन्दपूर्वक अपनी सेवा कर रहें हैं। गुरुकुल में की गई सेवा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। क्योंकि वहाँ हमारे इस्कॉन के भावी कर्णधारों को आकार दिया जाता है। यह बहुत अच्छा है कि गुरुकुल के बच्चे सप्ताह में एक बार पुस्तक वितरण भी करते हैं। पुस्तक वितरण के माध्यम से भक्त प्रचार की भावना का विकास करता है और पतितों के प्रति करुणा का भाव विकसित करने के महत्व को भी समझता है।

मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि आप गम्भीरतापूर्वक भक्ति की प्रक्रियाओं का पालन करते रहेंगे तो आप निश्चित रूप से स्वयं को विभिन्न अनर्थों से मुक्त कराने में समर्थ हो सकेंगे। अनर्थ सभी भक्तों के लिए मुख्य समस्या हैं। अतः सभी रोगग्रस्त व्यक्तियों के लिए उपचार की एक ही औषधि है। भजन क्रिया के माध्यम से इन अनर्थों को विनष्ट किया जा सकता है।

## २९. कौमार आचरेत् प्राज्ञो

गुरुकुल एक ऐसी संस्था है जहाँ इस्कॉन के भविष्य के भक्तों को प्रशिक्षण दिया जाता है। यदि बच्चों को अल्पायु से ही आध्यात्मिक जीवन के विषय में प्रशिक्षण दिया जाए तो वे शुद्ध चेतना विकसित करते हुए बड़े होते हैं। दुर्भाग्यवश आज अधिकांश बच्चे अपने माता-पिताओं के द्वारा उपेक्षित किए जा रहे हैं और परिणामस्वरूप वे भौतिकवादी अवधारणाओं को लेकर बड़े हो रहे हैं।

## ३०. बहिरंगा (माया) शक्ति

मैं समझ सकता हूँ कि आप उच्च रक्तचाप (ब्लडप्रेशर) से पीड़ित हैं। यह भौतिक देह तो सदैव कष्टों का स्रोत बना रहेगा। कोई न कोई कारण हमें यह स्मरण कराने हेतु प्रकट होता ही रहेगा कि हम भौतिक जीवन में कदापि प्रसन्न नहीं रह सकते। बहिरंगा शक्ति हमें यह विश्वास दिलाती है कि इस भौतिक संसार में दुख के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

मुझे आशा है कि आपका केन्द्र भली प्रकार से विकसित हो रहा हैं, और नए लोग कृष्णभावनामृत की ओर आकर्षित हो रहे हैं। प्रेमाभक्ति की क्रियाओं को विधिपूर्वक करने से ही आध्यात्मिक जीवन में सफलता की कुंजी प्राप्त होती है। आपको नियमित रूप से अपनी निर्धारित मालाओं

का ध्यानपूर्वक जप करना चाहिए, और कम से कम एक घंटा ग्रन्थों का अध्ययन भी करना चाहिए। ग्रन्थों का अध्ययन एवं हरिनाम का जप आध्यात्मिक प्रगति की कुंजी है।

## ३१. दीक्षा

कृपया गम्भीरतापूर्वक कृष्णभावनामृत को स्वीकार कीजिए। लाखों जन्मों के उपरान्त कृष्णभावनाभावित बनने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त होता है। अब जबकि आप कृष्णभावनामृत के सम्पर्क में आ गए हैं तो कृपया पूरी निष्ठा से इस प्रक्रिया को अंगीकार कीजिए और किसी भी प्रकार से भक्ति की प्रक्रिया से पथभ्रष्ट मत होइये। मैं समझ सकता हूँ, कि आप घर पर रहते हुए ही कृष्णभावनामृत का अभ्यास कर रहे हैं। आपने यह उल्लेख किया है कि आप मेरे शिष्य बनना चाहते हैं। इस्कॉन में यह नियम है कि दीक्षा का इच्छुक भक्त कम से कम गत 6 माह से नियमित रूप से 16 मालाओं का जप करता रहा हो यदि आप निर्धारित आध्यात्मिक मानकों (स्तरों) का एक निश्चित समय से पालन कर रहे हैं तो आप स्थानीय मन्दिर अध्यक्ष के पास जाकर यह निवेदन कर सकते हैं कि वे आपको 17 प्रश्नों वाला प्रश्नपत्र प्रदान करें। जब आप यह परीक्षा उत्तीर्ण कर लेंगे तो मैं आपको अपना प्रणाम मन्त्र बोलने की अनुमति प्रदान करूँगा।

यह निश्चित रूप से सर्वोत्तम होगा यदि आप मन्दिर मैं आकर रह सकें। परन्तु यदि आप सोचते हैं, कि मन्दिर के वातावरण के साथ तालमेल करना आपके लिए कठिन होगा तो आप घर पर भी रह सकते हैं। कृपया जितना अधिक से अधिक हो सके, आप मन्दिर अवश्य जाइये। यद्यपि मन्दिर में रहने पर आपको कुछ विशेष सामंजस्य बनाने हेतु बाध्य होना पड़ेगा, परन्तु यह निश्चित रूप से बहुत लाभदायक है, क्योंकि यह हमें

अधिक कठोरता और गम्भीरता से कृष्णभावनामृत का अभ्यास करने के लिए बाध्य करता है।

अपने पत्र में शरणागति का भाव प्रकट करने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। केवल श्रीगुरु और श्रीकृष्ण में अटूट श्रद्धा होने पर ही आप आध्यात्मिक उन्नति कर सकते हैं और सम्पूर्ण वेदों के वास्तविक तात्पर्यों को समझ सकते हैं।

## ३२. कृष्णभावनामृत

अपने विस्तृत पत्र में आपने बहुत से महत्वपूर्ण विषयों को उठाया है और मैं आपकी स्पष्टता की प्रशंसा करता हूँ।

इस भौतिक जगत् में प्रायः उलझनें आती ही रहती हैं। जैसे यह व्याकुलता कि आध्यात्मिक पथ को अपनाया जाए अथवा भौतिक मार्ग को? आप ऐसी पहली भक्त नहीं हैं जो इस प्रकार सोच रही हैं। दीर्घ काल से भौतिक संग करते रहने के कारण व्यक्ति सोचता है कि उसके जीवन में पारिवारिक दायित्व तथा व्यावसायिक भविष्य ही सर्वोच्च महत्वपूर्ण विषय हैं और साथ ही साथ आध्यात्मिक जीवन का भी थोड़ा बहुत अभ्यास करते रहना चाहिए। उन गृहस्थों के प्रति आपके विचार भी पूर्णतः उचित हैं जो केवल अपने लिए ही संचय कर रहे हैं। एक युवा भक्त का व्यथित होना स्वाभाविक ही है जब वरिष्ठ भक्तों द्वारा प्रदर्शित किया गया आदर्श प्रभावशाली नहीं होता। परन्तु फिर भी ऐसे बहुत से वरिष्ठ भक्त हैं जो अत्यन्त उत्तम उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। क्योंकि गृहस्थों को परिवार का भरण-पोषण भी करना होता है, अतः उन्हें किसी प्रकार का व्यवसाय अथवा स्वतंत्र-आय का स्रोत विकसित करना ही पड़ता है।

आपने उचित बात कही, 'वास्तविक समस्या है कि किस प्रकार कृष्णभावनाभावित बना जाए।' अतः मेरा आपसे यही निवेदन है कि आप श्रील प्रभुपाद द्वारा दिए गए साधनों के द्वारा अपनी कृष्णभावना का विकास करने के प्रति एकाग्रचित्त हों और इस प्रकार श्रीकृष्ण के लिए आपकी आसक्ति क्रमशः बढ़ेगी। सदैव दृढ़संकल्प रहिए जैसे कि श्रील रूप गोस्वामी जी सुझाव देते हैं।

सुख की भ्रामक अवधारणाओं से प्रभावित मत होइये। सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक कन्या को अन्ततः विवाह करना ही पड़ता है। और उचित समय आने पर स्वयं श्रीकृष्ण ऐसी व्यवस्था कर देते हैं। अतः कृपया धैर्य बनाए रखिए। आप अवश्य ही सफल होंगी। एक भक्त की यह अटूट श्रद्धा होती है कि 'श्रीकृष्ण जो भी करते हैं वह मेरी वास्तविक भलाई के लिए ही करते हैं' आप बुद्धिमान् और गम्भीर भक्त हैं, अतः सदैव अपने गन्तव्य की ओर कदम बढ़ाती रहो।

## ३३. सदैव श्रीकृष्ण का स्मरण कीजिए

आप यह सुनिश्चित कीजिए कि आपकी पत्नी भी नियमित रूप से अपनी मालाओं का जप करती रहें, यद्यपि उन्होंने हाल ही में एक शिशु को जन्म दिया है। यदि माता दृढ़निश्चयी हो तो वह शिशु को जन्म देने के बाद भी अपना जप कर सकती है। हाँ, कलियुग का प्रभाव अत्यन्त सशक्त है और हमारी एकमात्र आशा कृष्णभावनामृत है।

वैसे तो बच्चों को गुरुकुल में भेजने का परामर्श दिया जाता है किन्तु यदि यह सम्भव नहीं है तो घर में ही बालक को आध्यात्मिक प्रशिक्षण दिया जा सकता है। श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि मृत्यु के समय आपका मन जहाँ भी होता है आप अगले जीवन में उसी गंतव्य पर पहुँच जाते हैं। इसलिए शास्त्र यह कहते हैं कि मन को सदैव केवल

श्रीकृष्ण में ही लगाना चाहिए और यदि कोई श्रीकृष्ण के स्मरण में निमग्न है तो पारिवारिक सदस्यों, मित्रों इत्यादि सहित सभी जन सन्तुष्ट हो जायेंगे। अतएव श्रीकृष्ण कहते हैं 'मन्मना भव मद्भक्तो' सदैव मेरा स्मरण करो। मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि आप प्रभुपाद के ग्रन्थों का वितरण एवं प्रचार कर रहे हैं। मैं अत्यन्त आभारी रहूँगा यदि आप वहाँ स्थित मेरे अन्य शिष्यों को भी प्रचार करने तथा भौतिकता में लिप्त न होने हेतु प्रोत्साहित करेंगे। प्रचार, परम आनन्द पाने का स्रोत है।

## ३४. आश्रम के अन्तर्गत रहना

वास्तविक मार्गदर्शन तो यह है कि हमें सदैव अन्य सभी वैष्णवों के सद्गुणों को देखना चाहिए। भक्तों के साथ रहने से व्यक्ति को आध्यात्मिक संगति के द्वारा सहायता प्राप्त होती है। निस्सन्देह एक आश्रम के अन्तर्गत रहने में कुछ असुविधा होती है, परन्तु इसके सकारात्मक पक्षों के द्वारा बहुत से लाभ भी प्राप्त होते हैं।

## ३५. विवाह

सबसे महत्वपूर्ण विषय यह समझना है कि इन्द्रियतृप्ति से सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। ध्यान का केन्द्र तो एकमात्र श्रीकृष्ण ही होने चाहिए, कोई अन्य व्यक्ति नहीं। कृष्णभावनामृत में स्त्रियों को विवाह करना ही चाहिए परन्तु आपको उचित अवसर स्वतः ही प्राप्त होने के लिए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करनी चाहिए। यदि आप निरंतर पुरुषों का चिन्तन करती रहोगी, तो आपका आध्यात्मिक जीवन विनष्ट हो जाएगा। यह मत सोचिए की विवाह करने से आपकी सभी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। समस्याओं का समाधान तभी होगा जब आप यह समझ जाऐं, कि आपको श्रीकृष्ण की सेवा में लगना चाहिए। श्रीकृष्ण के प्रति आसक्ति उत्पन्न करने की

प्रक्रिया अत्यन्त सरल है– ध्यानपूर्वक अपनी मालाओं का जप कीजिए, श्रील प्रभुपाद जी के ग्रन्थों का अध्ययन कीजिए और व्यावहारिक सेवा में भाग लीजिए। निरन्तर प्रचार करने से व्यक्ति को वैष्णव सिद्धांत का स्मरण रहता है। अतः जितना हो सके अधिकाधिक प्रचार कीजिए। यदि आप गुरु, साधु और श्रीकृष्ण का परामर्श स्वीकार नहीं करोगी, तो आपका मन क्रमशः आपको नरक की ओर घसीट ले जाएगा। अतः यह चुनाव आपको ही करना है, कि क्या आप आध्यात्मिक पथ पर चलना चाहेंगी अथवा विनाश के पथ पर?

## ३६. भौतिक योग्यता

मैंने भगवद्दर्शन पत्रिका में आपके दो लेख पढ़े और मैं आपके प्रयासों के लिए आपका हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। आपके अन्दर एक अच्छा लेखक बनने की प्रर्याप्त योग्यता है। आपके माता-पिता ने आपको सर्वथा उचित शिक्षा प्रदान की है, और जिस प्रकार आप और आपका भाई विकास कर रहे हैं, उसे देख कर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। कृपया लेखन कार्य करते रहिए। श्रीकृष्ण समझाते हैं कि वे ही समस्त गुणों के उद्गम हैं। और आपके पास लेखन की भौतिक योग्यता है। अतः कृपया इसे विकसित करते रहिए। यह अत्यन्त उत्तम होगा यदि आप नियमित रूप से भगवद्दर्शन के लिए लिखते हैं।

## ३७. भौतिक आसक्ति

मुझे बहुत प्रसन्नता होगी यदि आप किसी व्यावहारिक सेवा में जुड़ें। जैसे ही आप परम भगवान् के आन्दोलन की सेवा में अधिकाधिक निमग्न होंगे, आपकी समस्त भौतिक आसक्तियाँ शीघ्र ही दूर हो जाएँगी।

## ३८. सदैव श्रीकृष्ण पर आश्रित रहिए

मेरा आपके लिए यही सुझाव है कि आप जितना अधिक से अधिक हो सके नियमित रूप से मन्दिर जाइये। कृपया हतोत्साहित मत होइये अपितु इस कठिन परिस्थिति का उपयोग श्रीकृष्ण पर और अधिक आश्रित होने के लिए कीजिए। आपको श्रीमद्भागवतम् के प्रथम स्कन्ध से महारानी कुन्ती की शिक्षाओं का अध्ययन करना चाहिए। इस भौतिक जगत् में सदैव कठिनाइयाँ और बाधाएँ आती रहेंगी। ध्यानपूर्वक जप, ग्रन्थों का अध्ययन एवं भक्तों का संग करने से हमें श्रीकृष्ण का स्मरण करने और बहिरंगा शक्ति के आक्रमणों का सामना करने की शक्ति प्राप्त होगी।

## ३९. भौतिक जगत्

आपका पत्र बहुत ही स्पष्ट और निष्कपट था और मैं आपकी स्पष्टता की सराहना करता हूँ। इस भौतिक संसार में वास्तविक आनन्द जैसी कोई वस्तु नहीं है। भौतिकवादी जन यह सोचते हैं कि, वे इस भौतिक व्यवस्था से वास्तविक आनन्द निचोड़ लेंगे, परन्तु वास्तव में इस भौतिक प्रकृति में रंचमात्र भी आनन्द नहीं है। आपने इसका अनुभव कर लिया है और इसलिए आप घर पर रहते हुए भी साधना-भक्ति की प्रक्रियाओं का पालन कर रहे हैं। कृष्णभावनामृत ऐसी उत्कृष्ट प्रक्रिया है कि किसी भी स्थिति में इसका अभ्यास किया जा सकता है। निस्सन्देह मन्दिर में रहना भक्ति में उन्नति के लिए विशेष रूप से सहायक है, क्योंकि भक्तों का संग प्रात:काल जल्दी उठने, साधना भक्ति के नियमों का पालन करने एवं भली प्रकार से सेवा करने को अत्यन्त सरल बना देता है। फिर भी क्योंकि आपने घर पर ही रहने की इच्छा प्रकट की थी, इसमें भी कोई हानि नहीं है क्योंकि आप जप भी कर रहे हैं और भक्ति के अन्य विधि विधानों का पालन भी कर रहे हैं।

कृपया नियमित रूप से श्रीमद्भागवतम् का अध्ययन कीजिए। श्रीमद्भागवतम् और श्रीमद्भगवद्गीता में समस्त भौतिक आसक्तियों को नष्ट करने की क्षमता है। 'श्रीकृष्ण' नामक ग्रन्थ आपको परम भगवान् की महानता को समझने की सामर्थ्य प्रदान करेगा। केवल यह जानना कि भगवान् महान हैं, पर्याप्त नहीं है। हमें यह जानना चाहिए कि श्रीकृष्ण कैसे महान हैं? जब श्रीकृष्ण इस लोक में अवतरित हुए तब उन्होंने अनेक अतिमानवीय लीलाओं को प्रदर्शित किया जिनकी समानता कोई भी जीव कभी नहीं कर सकता।

कोई भी व्यक्ति जिसकी अपनी स्वतंत्र आय है उसे अवश्य ही अपनी आय का एक निश्चित प्रतिशत परम भगवान् की सेवा में समर्पित करना चाहिए, अन्यथा व्यक्ति को हर प्रकार से अपने कर्मों का परिणाम भुगतना पड़ेगा।

## ४०. माया

श्रीकृष्ण ने आपको अपने आध्यात्मिक गुरु एवं परम भगवान् के साथ अपने सम्बन्ध के विषय में समुचित बुद्धि प्रदान कर धन्य किया है। आप एक बहुत ही निष्ठावान् भक्त हैं, अतः श्रीकृष्ण आपको अधिक से अधिक उत्तरदायित्व प्रदान कर रहे हैं। भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट की सेवा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। श्रील प्रभुपाद चाहते थे कि उनके ग्रन्थों का विश्व की सभी प्रमुख भाषाओं में अनुवाद किया जाय। अतः आपको पूरे उत्साह से इस सेवा को करना चाहिए।

वैष्णवगण स्वाभाविक रूप से ही अत्यन्त दयालु होते हैं और वैष्णव ही अन्य वैष्णवों की उदारता की सराहना कर सकता है। आप मेरी आज्ञाओं का पालन करके एवं नियमित रूप से मुझे पत्र लिख कर मेरा संग प्राप्त कर सकते हैं।

यदि कोई एक क्षण के लिए भी श्रीकृष्ण को भूलता है तो तुरन्त माया वहाँ उपस्थित हो जाती है। ठीक उसी प्रकार जैसे जिस क्षण आप अपने घर का द्वार खुला छोड़कर जाएँ तो तुरन्त ही चोर अन्दर प्रविष्ट हो जाएँगे। अतः सर्वोत्तम समाधान यह है कि सदैव कृष्णभावनामृत में व्यस्त रहा जाए। जप और ग्रन्थों के अध्ययन के अतिरिक्त भक्त को किसी व्यावहारिक सेवा में भी जुड़ना चाहिए। आप भली प्रकार से एक ऐसी सेवा में रत हैं जो श्रील प्रभुपाद को अत्यन्त प्रिय है और इस विषय में मैं भी बहुत प्रसन्न हूँ। सदैव विनम्र बने रहिए और भगवान् के पवित्र नामों का जाप कीजिए। विनम्रता एक ऐसा शस्त्र है जिसके द्वारा आप श्रीकृष्ण को वशीभूत कर सकते हैं। क्योंकि आप पुस्तकों के अनुवाद सम्बन्धी कार्य में जुड़े हैं अतः आप स्वतः ही शास्त्रों का अध्ययन कर रहे हैं और अपने आध्यात्मिक ज्ञान का विस्तार कर रहे हैं। इस आध्यात्मिक ज्ञान से आपकी बुद्धि अधिकाधिक कुशाग्र बनेगी और अन्ततः यह इतनी तीव्र बन जाएगी कि जिस क्षण माया प्रहार करने का प्रयास करेगी, उसे खण्ड-खण्ड कर दिया जाएगा।

श्रील प्रभुपाद के ग्रन्थ समस्त मानवता के लाभ हेतु हैं। श्रील प्रभुपाद ने कहा कि उनके ग्रन्थों को अगले दस हजार वर्षों तक पढ़ा जाएगा। आपको समस्त वैष्णवों एवं सभी आध्यात्मिक गुरुओं के प्रति सम्मान का भाव रखना चाहिए। निस्सन्देह शिष्य का अपने आध्यात्मिक गुरु से बहुत विशिष्ट सम्बन्ध होता है, परन्तु साथ ही भक्त को समस्त वरिष्ठ वैष्णवों के प्रति आदर की भावना रखनी चाहिए। ऐसा नहीं होना चाहिए कि भक्त अपने गुरुदेव का तो सम्मान करे परन्तु अन्य आध्यात्मिक रूप से उन्नत भक्तों का अपमान करे।

## ४१. औषधि और आहार

मुझे यह पढ़कर प्रसन्नता हुई कि आप कॉफी की दुकानों में पुस्तक वितरण कर रहे हैं। आध्यात्मिक प्रगति के लिए हमें औषधि एवं आहार दोनों की ही आवश्यकता है। आध्यात्मिक उन्नति के लिए एकमात्र औषधि भगवन्नाम का जप तथा ग्रन्थों का अध्ययन है और आहार है व्यावहारिक सेवा में जुड़ना। श्रीकृष्ण के लिए व्यावहारिक सेवा करने से हम परम भगवान् के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित कर सकते हैं। भारत में ऐसे बहुत से लोग हैं जो केवल जप करते हैं परन्तु वे व्यावहारिक सेवा अथवा अपने कर्मों का फल भगवान् को अर्पित नहीं करते। अतः कृपया निरन्तर सेवा करते रहिए। स्वयं को व्यस्त रखिए। 'खाली दिमाग शैतान का घर होता है।'

## ४२. सम्बन्धियों द्वारा उत्पन्न बाधाएँ

आप अकेले ऐसे भक्त नहीं हैं जिन्हें सम्बन्धियों की ओर से उत्पन्न समस्याओं और बाधाओं का सामना करना पड़ता है। श्रीमद्भागवतम् में आप प्रहलाद महाराज के विषय में पढ़ते हैं कि किस प्रकार श्रीकृष्ण में अपनी श्रद्धा बनाये रखने के लिए उन्हें अनेक विपदाओं को सहन करना पड़ा। अतः कृपया दृढ़संकल्प बनाये रखिए और गुरु-साधु और श्रीकृष्ण की कृपा से आप सभी बाधाओं पर विजय प्राप्त करेंगे।

## ४३. अपराध

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप हरे कृष्ण महामन्त्र का जप करते समय होने वाले दस नाम अपराधों से बचने के लिए अत्यन्त व्याकुल हैं। मन्त्र का जप करने के तीन मुख्य स्तर होते है– अपराधों सहित नाम जप करना, शुद्धिकरण की अवस्था (नामाभास) और अन्ततः शुद्ध

अवस्था अर्थात् बिना किसी अपराध के जप करना। जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य नाम जप की तीसरी अवस्था को प्राप्त करना है। मुझे प्रसन्नता है कि आप उसी स्थिति को प्राप्त करने की आकांक्षा रखती हैं। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि मन्त्र का जप करते समय बहुत सावधान रहा जाए। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप श्रील प्रभुपाद लीलामृत पर आधारित पाठ्यक्रम का अध्ययन कर रही हैं। कृपया श्रील प्रभुपाद के जीवन चरित्र को ध्यानपूर्वक समझिए। प्रभुपाद जी इस विषय में अत्यन्त चिन्तित रहते थे कि भारतीय लोगों को बहुत गंभीरतापूर्वक कृष्णभावनामृत को स्वीकार करना चाहिए। प्रभुपाद जी को यह देखकर शोक होता था कि भारतीय लोग अपनी वास्तविक संस्कृति को भूल रहे हैं और केवल पश्चिमी देशों का अनुकरण कर रहे हैं। इसलिए अपने भौतिक दायित्वों के साथ कृपया कृष्णभावनाभावित भी बनिए और इस प्रकार आपको सुख की प्राप्ति होगी। कदापि मत भूलिए कि भौतिक व्यवस्थाएँ कभी वास्तविक आनन्द नहीं दे सकतीं। आप एक बुद्धिमान् कन्या हैं, इसीलिए आप कृष्णभावनामृत के सम्पर्क में आयी हैं, अतः कृपया गम्भीर और दृढ़ प्रतिज्ञ बनिए।

## ४४. हमारी वास्तविक स्थिति

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपका पुत्र भी आध्यात्मिक रूप से प्रगति कर रहा है और पुस्तक वितरण सम्बन्धी आपके प्रयासों में आपकी सहायता भी कर रहा है। आपने उसे 'कृष्णदास' नाम दिया है इसलिए अब यह सुनिश्चित कीजिए कि वह इस जीवन में एक 'कृष्णदास' बने। परन्तु समस्या यह है कि हम अपना वास्तविक स्वरूप नहीं समझते जो वास्तव में 'कृष्णदास' बनना ही है। इसके विपरीत हम भौतिक शक्ति के सम्पर्क में आकर सेवक बनने के स्थान पर स्वामी की भाँति कार्य करने लगते हैं।

सम्पूर्ण विश्व में लोग कृष्णभावनामृत के अभाव में कष्ट प्राप्त कर रहे हैं। इसलिए कृपया श्रीचैतन्य महाप्रभु के सेवक बनिए और पतित-आत्माओं का भवसागर से उद्धार करने की इस सम्मानजनक सेवा को पूर्ण मनोयोग से कीजिए।

## ४५. कृपया दृढ़ प्रतिज्ञ रहिए

जिन्होंने भौतिक शक्ति से प्रभावित होकर भक्ति मार्ग को त्याग दिया। उनका चिंतन करने की बजाये आपका लक्ष्य होना चाहिए उन भक्तों के पदचिन्हों का अनुसरण करना जिन्होंने सफलतापूर्वक प्रेममयी सेवा की, मैं समस्त शिष्यों को यही निर्देश देता हूँ कि वे अत्यन्त ध्यानपूर्वक अपनी मालाओं का जप करें और ग्रन्थों का अध्ययन भी करें। मैं जानता हूँ कि आप एक निष्ठावान् भक्त हैं, अतः कृपया दृढ़प्रतिज्ञ रहिए ताकि आप प्रेममयी सेवा के इस मंगलकारी मार्ग से कदापि पथभ्रष्ट न हों। यह दृढ़संकल्प आपके आध्यात्मिक परम गुरु श्रील प्रभुपाद व श्रीकृष्ण को अत्यन्त प्रसन्न करेगा।

## ४६. पवित्रता हेतु अभ्यास

किसी भी सेवा में सफलता पाने के लिए हमें पवित्रता प्राप्त करने हेतु अभ्यास करना चाहिए। ध्यानपूर्वक जप करने एवं श्रील प्रभुपाद के ग्रन्थों का अध्ययन करने से हम पवित्रता प्राप्त कर सकते हैं। श्रीचैतन्य महाप्रभु यह समझाते हैं कि हरेकृष्ण महामन्त्र का जप, हृदय में अनन्त काल से संचित हुए कल्मषों को धो कर उसे निर्मल बनाता है।

## ४७. प्रसाद वितरण

यदि आप घर में श्री श्री गौर-निताई जी के विग्रहों का पूजन कर रहे हैं तो इसमें कोई हानि नहीं है। वास्तव में गृहस्थों को यह अनुमोदन किया

जाता है कि वे अपने घर पर विग्रहों की सेवा–पूजन करें। आप प्रातःकाल विग्रहों की मंगल आरती कर सकते हैं और यदि सम्भव हो तो दिन भर में दो अन्य आरतियाँ भी कीजिए। आप आरतियों से पहले श्री विग्रहों को फल एवं जल भी अर्पित कर सकते हैं।

मैं समझ सकता हूँ कि अब आप प्रसाद वितरण की सेवा कर रहे हैं। निस्सन्देह प्रसाद की सेवा भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है, विशेषतः कलियुग में। प्रभुपाद कहते हैं कि कलियुग में आप लोगों के उदर को सन्तुष्ट करके उन्हें जीत सकते हैं। फिर भी आपको पुस्तक वितरण सम्बन्धी क्रियाओं को त्यागना नहीं चाहिए और आपको ऐसी युक्ति सोचनी चाहिए जिसके द्वारा आप प्रसाद वितरण के साथ ही साथ पुस्तक वितरण भी कर सकें।

कृपया घर पर रहते हुए भी कठोर साधना का पालन कीजिए। सुदृढ़ साधना किए बिना आध्यात्मिक प्रगति करना पूर्णतः असंभव है। कृपया प्रतिदिन ग्रन्थों का अध्ययन कीजिए और भक्तों का संग कीजिए। मन्दिर के सभी विभागों के साथ सहयोगपूर्वक सेवा कीजिए और कृष्णभावनामृत के उत्तरोत्तर विकास के लिए कृतसंकल्प रहिए।

## ४८. प्रचारक

श्रीकृष्ण श्रीमद्‌भगवद्‌गीता के अठारहवें अध्याय में यह उद्‌घोषणा करते हैं कि सभी प्रकार के भक्तों में उन्हें सर्वाधिक प्रिय वे प्रचारक हैं जो उनके प्रतिनिधि के रूप में उनके संदेश को बाँटते हैं। अतः कृपया पूर्ण मनोयोग से प्रयास कीजिए, श्रीकृष्ण आपकी सहायता करेंगे।

## ४९. प्रचार का वास्तविक उद्देश्य

मुझे प्रसन्नता हुई कि आपने व्यास–पूजा महोत्सव तथा अपनी भारत–यात्रा का भरपूर आनन्द लिया। आध्यात्मिक उन्नति करने के लिए अपने

आध्यात्मिक गुरु में अटूट श्रद्धा होना अत्यन्त आवश्यक है। शास्त्रों में यह वर्णन प्राप्त होता है कि जिस भक्त की श्रीकृष्ण और अपने आध्यात्मिक गुरु में पूर्ण श्रद्धा है, केवल उसके हृदय में ही सम्पूर्ण वेदों का वास्तविक सार प्रकाशित होगा। दुर्भाग्यवश आज दीक्षा प्राप्त करने के पश्चात् भी लोग वैदिक संदेश को नहीं समझते और अपने आध्यात्मिक गुरु में त्रुटियाँ (दोष) निकालते हैं। मैं जानता हूँ कि आप और आपकी पत्नी बहुत गंभीर भक्त हैं। अतः श्रीकृष्ण आपको उचित मार्ग की ओर निर्देशित कर रहे हैं। आप अपने उचित आध्यात्मिक-पोषण के कारण शास्त्रीय ज्ञान में भी भली प्रकार से निपुण हैं।

अब आपको प्रवचन देना आरम्भ करना चाहिए। आप भक्तों के घरों में होने वाले सत्संग कार्यक्रमों में तथा जन-सभाओं में प्रवचन दे सकते हैं। विश्व के बहुत से भागों में मन्दिर के बाहर रहने वाले गृहस्थ भक्त बड़े सक्रिय प्रचारक हैं। प्रचार में सफलता का रहस्य है कि भक्त अपने आध्यात्मिक गुरु से जो भी श्रवण करे उसे यथारूप दोहराये। प्रचार करना भक्त के लिए प्राण और आत्मा के समान है। प्रचार करने से हमारी श्रीकृष्ण पर आश्रित रहने की भावना बढ़ती है। और हम श्रीचैतन्य महाप्रभु के आन्दोलन के और अधिक निकट आते हैं। प्रचारक भक्तों को आध्यात्मिक रूप से सशक्त दृढ़प्रतिज्ञ एवं उत्साहित होना चाहिए। साथ-ही-साथ उन्हें धीर (धैर्यवान) और मृदु भी होना चाहिए। हमें पूरे हृदय से प्रचार करना चाहिए। इसका अर्थ है कि हमें पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि श्रीकृष्ण के अतिरिक्त अन्य कोई आशा नहीं है। आपका सौभाग्य है कि आप अल्प आयु से भगवान् श्री चैतन्य की शिक्षाओं का ज्ञान प्राप्त करते रहे हैं। इसलिए कृपया श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रचार अन्दोलन के वास्तविक उद्देश्य को समझने का प्रयास कीजिए, जो यह नहीं है कि लोगों को

हिन्दू बनाया जाय, बल्कि यह है कि किस प्रकार उन्हें परम भगवान् की निष्काम सेवा करने हेतु शिक्षित किया जाय। अतः कृपया दृढ़प्रतिज्ञ रहिए और प्रचार कार्य का विस्तार करने में सहायता कीजिए।

## ५०. पवित्रता का सिद्धांत

मैं आपके पत्र में आपके द्वारा प्रदर्शित विनम्रता के भाव की बहुत प्रशंसा करता हूँ। श्री चैतन्य महाप्रभु यह परामर्श देते हैं कि भगवान् के पवित्र नामों का निरन्तर जप करने की योग्यता पाने के लिए भक्त को निम्नलिखित शिक्षाओं के अनुसार भक्ति करनी चाहिएः

तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना।
अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः।।

मुझे यह सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आप पुस्तक वितरण के प्रति समर्पित भक्तों का संग करना पसंद करते हैं। भक्त को पुस्तक वितरण की महत्ता के प्रति आश्वस्त होना चाहिए तब स्वयं को इस सेवा के प्रति समर्पित करना सम्भव होगा।

हाँ, अपने आध्यात्मिक गुरु को प्रसन्न करके भक्त श्रीकृष्ण की कृपा प्राप्त कर सकता है। श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण यह विश्वास दिलाते हैं कि वे एक निष्ठावान् भक्त की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं और जो कुछ उनके पास है उसकी रक्षा करते हैं। इसलिए प्रयासरत रहिए और क्रमशः आपको बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे।

पवित्रता के सिद्धांतों का पालन करने से हमें आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होती है। अतः कृपया पवित्रता के नियमों का अभ्यास कीजिए। आप आध्यात्मिक जीवन में अग्रसर होने के लिए अधिकाधिक दृढ़प्रतिज्ञ बनते जायेंगे।

## ५१. कृष्ण के प्रिय कैसे बनें

कृपया श्री चैतन्य महाप्रभु की पुस्तक वितरण प्रक्रिया के प्रति अपने-आप को समर्पित कीजिए एवं पतित जीवात्माओं के उद्धार और उन्हें भगवद्धाम वापस भेजने में सहायता कीजिए। इस क्रिया से बहुत शुद्धिकरण होता है। यह भक्तों को भगवान् का परम प्रिय बनाने में सर्वथा समर्थ है।

## ५२. वास्तविक पथ

सम्पूर्ण जगत् कृष्णभावनामृत के अभाव में तड़प रहा है। जब तक भक्तजन यह उत्तरदायित्व नहीं लेंगे तब तक कृष्णभावनामृत किस प्रकार फैलेगा? लोग आनन्द-प्राप्ति का वास्तविक मार्ग नहीं जानते। आनन्द-प्राप्ति का वास्तविक पथ है, परम भगवान् की सेवा करना। श्रील प्रभुपाद जी ने अत्यन्त उदारतापूर्वक अनेक ग्रन्थों का अनुवाद किया और जब हम इन ग्रन्थों का अध्ययन करेंगे तब हम यह बेहतर समझ विकसित कर सकते हैं कि मनुष्य जीवन में किस प्रकार पूर्णता प्राप्त की जाए। कृपया जितने अधिक से अधिक कार्यक्रमों का आयोजन आप कर सकें, करते जाइये। भक्तों के साथ सहयोगपूर्वक संग कीजिए इस प्रकार आप सदैव प्रसन्न रहेंगे।

मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि आपकी पुत्री भी कृष्णभावनामृत में जुड़ने का प्रयास कर रही है। निश्चित रूप से माता-पिता का अपने बच्चों पर अत्यधिक सशक्त प्रभाव पड़ता है। क्योंकि आप कृष्णभावनाभावित हैं, आपकी पुत्री भी इससे प्रभावित हो रही है। इसलिए प्रह्लाद महाराज ने कहा कि अल्प आयु (कौमार अवस्था) से ही बच्चों को कृष्णभावनामृत में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

## ५३. वास्तविक आनन्द

सबसे महत्वपूर्ण विषय तो अनुभव करना है कि यदि आप सकारात्मक रूप से सेवा में नहीं जुड़ेंगे तो इन्द्रियाँ निषिद्ध क्रियाओं की ओर प्रवृत्त हो जायेंगी। कृपया आश्वस्त रहिए कि इस भौतिक संसार में रंचमात्र भी वास्तविक आनन्द नहीं है, और यदि कोई वास्तविक आनन्द को प्राप्त करने का इच्छुक है तो उसे पूर्ण पुरुषोत्तम श्री भगवान् की शरणागति स्वीकार करनी ही होगी। भगवान् श्री चैतन्य ने हमें शरणागत होने की सर्वाधिक सरल प्रक्रिया प्रदान की है और वह हैं, श्रीकृष्ण के पवित्र नामों का कीर्तन। कृपया ध्यानपूर्वक जप कीजिए और आध्यात्मिक पथ पर ही अडिग बने रहने हेतु दृढ़ प्रतिज्ञ रहिए।

## ५४. वास्तविक वृन्दावन

मुझे यह पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आप मुझसे वृन्दावन में मिलने की अभिलाषा रखते हैं। निरन्तर श्रीकृष्ण का स्मरण करते हुए भक्त सदैव वास्तविक वृन्दावन में वास करता है।

## ५५. प्रचार की भावना

भक्त में प्रचार की भावना सदैव रहनी चाहिए। अन्यथा भक्त पूरी तरह शुष्क हो जाता है। प्रचार हमारे आध्यात्मिक जीवन को सजीव बनाए रखता है। कृपया सदैव आध्यात्मिक पथ पर एकाग्रचित्त रहिए। कलियुग में हम सभी का पालन–पोषण एक दूषित समाज में किया गया है। इसीलिए कृष्णभावनामृत के सम्पर्क में आने के पश्चात् भी हमें अपने हृदय की दुर्बलता और विसंगतियों का निवारण करने में समय लगता है। परन्तु फिर भी दृढ़संकल्प से असम्भव कार्य भी सम्भव बन सकता है। हमें बुद्धिमत्तापूर्वक यह विश्लेषण करना चाहिए कि भौतिक आसक्ति कालांतर

में हमें कष्ट ही देगी। हम महाराज चित्रकेतु की कथा में यह देखते हैं कि महाराज अपने पुत्र से अत्यधिक आसक्त थे, परन्तु जब उन्होंने अपने पुत्र को खो दिया तो अत्यन्त शोकमग्न हो गए। इसलिए कोई भी भौतिक सम्बन्ध जो आज आपको आनन्द प्रदान करता है कल वही आपके दु:ख का कारण बनेगा। अत: हमें अपने प्रेम को पूरी तरह पूर्ण पुरुषोत्तम परम भगवान् श्रीकृष्ण की ओर केन्द्रित करना चाहिए।

मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि आप सदैव प्रेममयी सेवा के पथ पर स्थिर बने रहें और इन्द्रियतृप्ति के विचारों पर थूकते रहें। शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत कीजिए और परस्पर सहयोगपूर्वक सेवा कीजिए।

## ५६. सदैव कृष्णभावनामृत का अभ्यास कीजिए

मैं समझ सकता हूँ कि अब आप मन्दिर में न रहकर घर पर ही रह रही हैं। आप जहाँ भी हों कृपया कृष्णभावनामृत का अभ्यास कीजिए। यही सबसे महत्वपूर्ण है। यह मानव जीवन भगवत्प्रेम प्राप्त करने के निमित्त ही मिला है।

मुझे आशा है कि आप नियमित रूप से मन्दिर जा रही हैं। क्या आप घर पर नियमित रूप से अपनी मालाओं का जप कर पा रही हैं? हरिनाम के जप, ग्रन्थों के अध्ययन तथा भक्तों के संग के बिना आध्यात्मिक उन्नति करना असम्भव है। आप केवल जप ही मत कीजिए अपितु यह भी सुनिश्चित कीजिए कि आपके जप की गुणवत्ता का स्तर भी उत्तम हो। कृपया मन्दिर के लिए कुछ व्यावहारिक सेवा करने का भी प्रयास कीजिए। आप टाइपिंग करना जानती हैं और आपमें कई और भी प्रतिभाएँ हैं। श्रील रूप गोस्वामी जी ने कहा है कि दृढ़संकल्प के बिना आध्यात्मिक उन्नति करना असम्भव है। आपको नियमित रूप से या तो

फार्म में अथवा फोनेक्स मन्दिर अवश्य ही जाना चाहिए। कृपया इस बात से पूर्णतः आश्वस्त रहिए कि कृष्णभावनाभावित होने से आपकी समस्त इच्छाएँ सन्तुष्ट हो जायेंगी।

## ५७. आध्यात्मिक उन्नति

श्रीकृष्ण सभी जीवों के हृदय में स्थित हैं और वे ही स्मृति एवं विस्मरण के एकमात्र कारण हैं। क्योंकि आप अत्यन्त गम्भीर भक्त है, अतः श्रीकृष्ण आपको बनावटी गुरुओं के चंगुँल से मुक्त करवाकर श्रील प्रभुपाद के इस्कॉन आन्दोलन के सम्पर्क में ले आए जो इस पृथ्वी का सर्वाधिक पवित्रतम आन्दोलन है। हमारा सिद्धांत अत्यन्त सरल है। वर्तमान समय में अन्तहीन भौतिक इच्छाओं के कारण हमारा हृदय अत्यन्त कलुषित और अशुद्ध है। जब तक भौतिक इच्छाओं का अस्तित्व बना रहेगा तब तक न तो हम परम भगवान् को समझ पाएंगे और न ही स्वयं को जन्म और मृत्यु के दु:खों से मुक्त करा सकेंगे। आध्यात्मिक गुरु की यह तीव्र अभिलाषा होती है कि वे यह देखें कि शिष्य भक्ति में अधिकाधिक संलग्न होकर अपने समस्त अनर्थों का उन्मूलन कर रहे हैं। अतः मेरा आपसे यही निवेदन है कि आध्यात्मिक प्रक्रियाओं को गम्भीरतापूर्वक अपनाइये और दृढ़ प्रतिज्ञ बने रहिए। चाहे आपको कोई भी मूल्य चुकाना पड़े आपको भगवद्धाम वापसी के इस सुअवसर को व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। इसका यह अर्थ है कि आपको प्रतिदिन प्रातःकाल अत्यन्त सावधानीपूर्वक अपनी मालाओं का जप करना चाहिए, मन्दिर में प्रातःकालीन कार्यक्रम में भाग लेना चाहिए, प्रतिदिन कम से कम एक घंटा ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिए और व्यावहारिक सेवा में भी संलग्न होना चाहिए। अपने मन को स्वयं पर हावी मत होने दीजिए। भक्तों का संग कदापि मत छोड़िए। चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ आएँ उन्हें सहन कीजिए और निरन्तर अपनी सेवा

करते रहिए। इससे मुझे प्रसन्नता होगी और आपको आध्यात्मिक प्रगति करने में सहायता मिलेगी।

## ५८. आध्यात्मिक विस्फोटक

स्वयं को पुस्तक वितरण प्रक्रिया हेतु समर्पित करने के लिए आपको धन्यवाद। पुस्तक वितरण इतना महत्वपूर्ण क्यों है? ऐसा क्या कारण है कि प्रभुपाद जी ने इस सेवा को करने पर बारम्बार बल दिया? परम भगवान् की यही अभिलाषा है कि समस्त बद्धजीवात्माओं को उनके पास वापस लाया जाए। उन्हें केवल तभी वापस लाया जा सकता है जब कोई भक्त उन्हें भौतिकवादी अवधारणाओं के अनुसार जीवन बिताने सम्बन्धी मूर्खता के विषय में प्रचार करे। श्रील प्रभुपाद के ग्रन्थ आध्यात्मिक विस्फोटक हैं। वे उस माया जाल को नष्ट कर सकते हैं जो हमें देहात्मबुद्धि में फँसाकर भ्रमित करता है। कृष्णभावनामृत का अर्थ है, देहात्मबुद्धि के स्तर से ऊपर उठकर आध्यात्मिक स्तर पर आना और यह समझना कि मैं भगवान् का शाश्वत सेवक हूँ। इसलिए यदि आपको प्रेममयी सेवा करने हेतु अपने मन तथा इन्द्रियों से संघर्ष भी करना पड़े तो भी हतोत्साहित मत होइये। जैसे-जैसे आप अपने गुरु और श्रीकृष्ण के प्रति शरणागत होंगे, भगवान् आपको अधिकाधिक शक्ति प्रदान कर धन्य करेंगे।

## ५९. आध्यात्मिक जीवन

आपके पत्र द्वारा मैं यह समझ सकता हूँ कि आप एक अत्यन्त गम्भीर प्रत्याशी है और आध्यात्मिक जीवन को खोज रहे हैं। आध्यात्मिक जीवन को विकसित करने की आकांक्षा लाखों बार जन्म लेने और मृत्यु होने के उपरान्त ही प्राप्त होती है। अब जबकि ये इच्छाएँ विकसित हो रही हैं तो कृपया यह सुनिश्चित कीजिए कि ऐसी कोई भी क्रिया न की जाए जो

इन इच्छाओं को विनष्ट करने वाली हो। श्री चैतन्य महाप्रभु यह उपदेश देते हैं कि ध्यानपूर्वक जप करके, श्रवण करके और आध्यात्मिक संगति द्वारा इन इच्छाओं का विकास किया जा सकता है।

## ६०. आध्यात्मिक मार्ग

आपका का हस्तलेख बहुत अच्छा है और आप बहुत सुन्दर लेखन करते हैं। मैं आशा करता हूँ कि आप आध्यात्मिक मार्ग पर अडिग रहेंगे और आध्यात्मिक सफलता पाने हेतु दृढ़प्रतिज्ञ रहेंगे। श्री चैतन्य चरितामृत में यह बताया गया है कि सैंकड़ों हजारों जन्मों में पुण्य कर्म करने के बाद भी शुद्ध प्रेमाभक्ति को प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसे केवल तभी प्राप्त किया जा सकता है जब हृदय में इसे पाने के लिए उत्कट लालसा हो। सदैव अपनी मालाओं का जप कीजिए और कृष्णभावनाभावित बनने के लिए पूर्णत: लोभी बनिए।

## ६१. आध्यात्मिक प्रगति

कृपया आध्यात्मिक सफलता पाने के लिए कृतसंकल्प रहिए क्योंकि जब तक हम दृढ़प्रतिज्ञ नहीं होंगे, तब तक आध्यात्मिक प्रगति करना अत्यन्त कठिन होगा। पारिवारिक समस्याएँ तो सदैव रहेंगी ही। श्रील रूप गोस्वामी जी यह उपदेश देते हैं कि हमें ऐसी प्रत्येक वस्तु को स्वीकार करना चाहिए, जो आध्यात्मिक प्रगति के लिए अनुकूल है और ऐसी प्रत्येक विषय वस्तु का परित्याग करना चाहिए जो इसके प्रतिकूल है।

## ६२. निष्ठावान् भक्त

क्योंकि आपने विवाह करने का निर्णय कर लिया है अत: मेरा मात्र यही सुझाव है कि आप इस विषम परिस्थिति का भी उचित उपयोग कीजिए। मैं भक्तों के गृहस्थ-आश्रम में प्रवेश करने के विरुद्ध नहीं हूँ। मैं चाहूँगा

कि एक गृहस्थ के रूप में भी आप श्रील प्रभुपाद के आन्दोलन की सेवा करते रहें। मैंने यह देखा है कि बहुत से भक्त विवाह करते हैं और क्रमशः वे प्रेममयी सेवा (भक्ति) के प्रति उदासीन हो जाते हैं। आप सदैव एक अच्छे भक्त रहे हैं और मैं यह चाहूँगा कि आप आजीवन एक निष्ठावान् भक्त बने रहें।

## ६३. कठोर साधना

यदि आप आध्यात्मिक उन्नति करना चाहते हैं तो इसके लिए कठोर साधना अत्यन्त आवश्यक है। श्रील रूप गोस्वामी, भक्तिरसामृतसिंधु में इसका विस्तृत वर्णन करते हैं। प्रातःकालीन कार्यक्रम मन तथा इन्द्रियों को संयमित करने हेतु तथा मन को परम भगवान् की सेवा में लगाने के लिए अत्यधिक सहायक है।

## ६४. पीड़ित मानवता

कृपया दृढ़प्रतिज्ञ रहिए और प्रभुपाद के ग्रन्थों का वितरण करते रहिए। ये ग्रन्थ ही पीड़ित मानवता के लिए आशा की एकमात्र किरण हैं। प्रभुपाद जी ने हमें बताया कि आने वाले दस हजार वर्षों तक इन ग्रन्थों का अध्ययन किया जाएगा। यदि हम इन ग्रन्थों में निहित गूढ़ सन्देश की शरण स्वीकार करें तो संसार की सभी समस्याओं का समाधान किया जा सकेगा।

## ६५. आध्यात्मिक गुरु का महत्व

मैं आपके उदार शब्दों की भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ और यह आशा करता हूँ कि आप सदैव अपनी इसी समझ के अनुसार भक्ति करेंगे जो यह इंगित करती है कि आध्यात्मिक गुरु की क्या दिव्य स्थिति होती है। प्रतिदिन गुर्वष्टकम् प्रार्थना में हम यह याचना गाते हैं कि आध्यात्मिक गुरु की कृपा से कोई श्रीकृष्ण को प्राप्त करता है और जब आध्यात्मिक गुरु

प्रसन्न होते हैं तभी परम भगवान् भी प्रसन्न होते हैं। इस भौतिक जगत् की तुलना दावाग्नि से की जाती है।

## ६६. शरणागति

श्रीकृष्ण आपकी शरणागति के आधार पर आपको सेवा प्रदान करेंगे। जब हम हरे कृष्ण महामन्त्र का जप करते हैं तो उसके द्वारा हम परम् भगवान् से यह प्रार्थना करते हैं कि हमें अपनी प्रेममयी सेवा में संलग्न करें। अतः आपको अत्यंत ध्यानपूर्वक अपनी मालाओं का जप करना चाहिए। क्योंकि आप मंदिर से बाहर रहते हैं, आपको नियमित रूप से मंदिर जाना चाहिए और कुछ व्यावहारिक सेवा भी करनी चाहिए।

## ६७. श्री षड्गोस्वामीवृन्द की शिक्षाएँ

श्री षड्गोस्वामीगण श्री चैतन्यमहाप्रभु के नित्य पार्षद हैं। वे सभी मंजरियाँ हैं, जो भगवान् श्री चैतन्य की दिव्य लीलाओं के माधुर्य को और अधिक सर्वर्द्धित करने हेतु अवतरित होती हैं। गोस्वामीवृन्द की अनेकों सुमधुर लीलाएँ हैं। मैं यह अनुमोदन करूँगा, कि आप सत्यराज प्रभु द्वारा रचित पुस्तक श्रीषड्गोस्वामी का अध्ययन अवश्य ही करें। आपको श्रीषड्गोस्वामिओं की शिक्षाओं, उनके जीवन चरित्र और अहैतुकी प्रेमाभक्ति में निमग्न होने की उनकी तीव्र अभिलाषा का सदैव स्मरण करना चाहिए। गोस्वामीगण स्वयं तो सरल रीति से जीवन व्यतीत करते थे, परन्तु दूसरी ओर परम भगवान् के लिए उन्होंने वृन्दावन में अत्यन्त वैभवशाली व भव्य मन्दिरों का निर्माण कराया। श्रील नरोत्तमदास ठाकुर यह कहते हैं कि कब वह शुभ दिन आयेगा, जब वे गोस्वामियों के दिव्य ग्रन्थों का अध्ययन करने की सामर्थ्य प्राप्त करेंगे। श्रील रूपगोस्वामी यह व्याख्या करते हैं–

आदौ श्रद्धा ततः साधु-सङ्गोऽथ भजनक्रिया।
ततोऽनर्थनिवृत्तिः स्यात् ततो निष्ठा रुचिस्ततः।।

अथासक्तिस्ततो भावस्ततः प्रेमाभ्युदचति।
साधकानामयं प्रेम्णः प्रादुर्भावे भवेत् क्रमः।।

प्रारम्भ में हमारे हृदय में श्रद्धा होनी चाहिए। तब व्यक्ति में शुद्ध भक्तों की संगति प्राप्त करने की अभिरुचि उत्पन्न होती है। उसके बाद भक्त अपने आध्यात्मिक गुरु से दीक्षा प्राप्त करता है और उनकी आज्ञानुसार भक्ति के विधि-विधानों का पालन करता है। इस प्रकार भक्त समस्त प्रकार के अनर्थों से मुक्त होकर प्रेमाभक्ति में दृढ़तापूर्वक स्थिर हो जाता है। तत्पश्चात् भक्त रुचि एवं आसक्ति उत्पन्न करता है। यह वैधी-साधन भक्ति का पथ है, जिसका अर्थ है विधि-विधानों के अनुसार प्रेममयी सेवा का निष्पादन करना। क्रमशः भावों में प्रगाढ़ता आती है। और अंततः हृदय में कृष्ण-प्रेम जागृत हो जाता है। इस प्रक्रिया द्वारा कृष्णभावनामृत में रुचि रखने वाले भक्त के हृदय में भगवत्प्रेम का क्रमिक विकास होता है। कृपया सदैव अपनी मालाओं का ध्यानपूर्वक जप कीजिए। और प्रतिदिन कम-से-कम एक घंटा ग्रन्थों का अध्ययन कीजिए और उत्साहपूर्वक सेवा कीजिए।

## ६८. सद्‌बुद्धि

मन को नियन्त्रित करने के लिए सद्‌बुद्धि का होना अत्यन्त आवश्यक है। जब बुद्धि मन को नियन्त्रित करती है तब आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करना सम्भव होता है। यदि भौतिकता से ग्रस्त मन बुद्धि को नियन्त्रित करता है तब आध्यात्मिक जीवन अत्यन्त कष्टकर हो जाता है। हमें बन्दरों की भाँति उछलकूद नहीं करना चाहिए। आप स्वयं अपनी समस्याओं को

जानते हैं, तो भला इस दुर्लभ मानव जीवन को व्यर्थ क्यों गवाँया जाए। श्रीकृष्ण यह परामर्श देते हैं कि हमें अपने मन को अपना मित्र बनाना चाहिए और इसे अपने शत्रु की भाँति नहीं बनने देना चाहिए। हरे कृष्ण महामन्त्र का ध्यान-पूर्वक जप करने से, अध्ययन करने से व स्वयं को भक्तिपूर्ण क्रियाओं में निमग्न करने से उपद्रवी मन को वशीभूत किया जा सकता है।

## ६९. वैष्णव सिद्धान्त

आप एक गम्भीर आत्मा हैं, परन्तु आपको अपने मन को नियन्त्रित करने हेतु दृढ़संकल्प विकसित करने की आवश्यकता है। हमें वैष्णव सिद्धान्त को भली प्रकार समझकर कृष्णभावनामृत को स्वीकार करना चाहिए, भावुकता के वशीभूत होकर नहीं। यह बहुत अच्छी बात है, कि आप श्रील प्रभुपाद के ग्रन्थों को पढ़ने में रुचि रखते हैं। जप, अध्ययन करते रहिए। और जब व्यक्ति एक आश्रम में रह रहा हो, उसे सहयोग की भावना विकसित करनी चाहिए ताकि सभी भक्त एक साथ शान्तिपूर्वक रह सकें। केवल स्वयं को भक्ति में अधिकाधिक निमग्न करते जाइये और क्रमशः आपकी समस्त भौतिक समस्यायें समाप्त हो जायेंगी।

## ७०. सहनशीलता

आप जप और ग्रन्थों का अध्ययन करते रहिए और मन्दिर के अध्यक्ष के निर्देशानुसार सेवा करते रहिए। इस प्रकार आप कभी गलती नहीं करेंगे। भक्ति मार्ग में अनेक कठिनाइयाँ भी आयेंगी, अतः कृपया कृतसंकल्प बने रहिए। आध्यात्मिक प्रगति करने के लिए आन्तरिक व बाह्य, दोनों ही प्रकार की सहनशीलता नितान्त आवश्यक है। आन्तरिक सहनशीलता का अर्थ है, इन्द्रियों के वेगों को सहन करना और बाह्य सहनशीलता

का अर्थ है, भौतिक विषमताओं को सहन करना। जैसे–जैसे आप ग्रन्थों का अध्ययन, हरिनाम का जप व सेवा करते रहेंगे, आपकी सहनशीलता स्वत: ही दृढ़ होती जाएगी।

## ७१. वैष्णव अपराध

भक्त को निश्चित रूप से अपराध करने की प्रवृत्ति के प्रति सावधान रहना चाहिए, विशेषत: वैष्णव अपराध। दस नामापराधों में प्रथम नाम–अपराध अत्यन्त महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से वैष्णव अपराध के द्वारा। सभी प्रकार के सद्‌गुण विनष्ट हो सकते हैं, नि:सन्देह भक्त अत्यधिक क्षमाशील होता है, जिस प्रकार श्रील हरिदास ठाकुर अतीव क्षमाशील थे। उन्होंने उन लोगों को भी क्षमा कर दिया जिन्होंने उन्हें पीट–पीटकर मार डालने का प्रयास किया। अनर्थ आध्यात्मिक उन्नति के शत्रु हैं। इनके समाधान की विधि अत्यन्त सरल है और आप उसके विषय में बारम्बार सुन चुके हैं।

## ७२. प्रतिदिन २४ घंटे सेवा कीजिए

आपके पास खाली बैठने का समय क्यों है? यह अच्छा लक्षण नहीं है। आपको स्वयं को 24 घंटे सेवा में व्यस्त रखना चाहिए। केवल तभी आपकी आध्यात्मिक रूप से रक्षा हो पाएगी।

## ७३. मानवता

भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु की शिक्षायें ही कष्टों से पीड़ित मानवता के लिए आशा की एक मात्र किरण हैं। अत: कृपया स्वयं को पुस्तक वितरण के प्रति समर्पित कीजिए। आदर्श आचरण ही प्रचार का सर्वोत्तम साधन है। अत: कृपया एक दृढ़ आध्यात्मिक चरित्र बनाए रखिए और पवित्रता के सिद्धान्त की सुरक्षा कीजिए। इससे मुझे अत्यधिक प्रसन्नता होगी।

## ७४. आध्यात्मिक गुरु

नि:सन्देह मुझे आपके विषय में स्मरण है। आध्यात्मिक गुरु कभी अपने शिष्य को नहीं भूलते। परन्तु मैं नहीं जानता कि क्या आपको उन शिक्षाओं का स्मरण है जो आपके गुरु ने आपको प्रदान कीं? क्या आप बिना किसी बाधा के नियमित रूप से प्रतिदिन अपनी 16 मालाओं का जप कर रहे हैं? प्रभुपाद के ग्रन्थों का अध्ययन कर रहे हैं और चार नियमों का पालन कर रहे हैं? इस विषय में मुझे सूचित कीजिए। किसी समय आपको मुझसे मिलने के लिए आने का प्रयास भी करना चाहिए। मैं नियमित रूप से दिल्ली आता हूँ, अत: मुझसे मिलना आपके लिए कठिन नहीं होगा। परन्तु इसके लिए आपको दृढ़प्रतिज्ञ होना पड़ेगा।

## ७५. समर्पण

मुझे आपकी यात्रा संबंधी समय-सारणी एवं इस तथ्य के विषय में जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि आप पुस्तक-वितरण पर अपना पूरा ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। पुस्तक वितरण करने वाले भक्तों को अधिक से अधिक पुस्तकों का वितरण करने एवं अधिकाधिक लोगों को भक्ति के प्रति आश्वस्त करने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ रहना चाहिए। दुर्भाग्यवश अधिकांश लोग इसमें रुचि नहीं दिखाते। परन्तु यदि भक्त निष्ठावान हो और गुरु एवं कृष्ण की कृपा रहे तो निष्ठारहित व्यक्ति भी एकनिष्ठ बन सकते हैं। यहाँ तक कि नेत्रहीन व्यक्तियों को भी दृष्टि प्रदान की जा सकती है। आपको प्रत्येक बद्ध जीवात्मा को परम भगवान् के परिवार के ही अंश के रूप में देखना चाहिए।

मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि आप इस आन्दोलन के प्रति समर्पित रहें। श्रीकृष्ण के प्रति समर्पित होने से प्रत्येक कार्य सरल हो जायेगा।

श्रीकृष्ण के प्रति हमारा समर्पण व प्रेम, गुरु परम्परा के पद्चिन्हों का अनुगमन करने से विकसित होता है। श्रीकृष्ण यह देखना चाहेंगे कि प्रत्येक बद्धजीव उनकी शरण में वापस आए। आपका एवं आपके दल का उपयोग, बद्धजीवात्माओं को भगवद्धाम वापस लाने वाले दूतों की भाँति किया जा रहा है।

आपको कभी मान-सम्मान प्राप्त करने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। हमारी समस्या यह है कि हम सभी मान-सम्मान की इच्छा रखते हैं और जब हमें यह प्राप्त नहीं होता तो हमारे हृदय को चोट पहुँचती है।

बस विनम्र बने रहिए। निःसन्देह अन्य वैष्णवों को आपमें विद्यमान वैष्णव-गुणों की पहचान कर आपका यथोचित सम्मान करना चाहिए, परन्तु यदि वे ऐसा नहीं करते तो कृपया सहिष्णु बने रहिए और अपमान इत्यादि को सहन कीजिए। सहनशील बनने से आप सदैव विजयी होंगे। आप आध्यात्मिक गुरु की शिक्षाओं के प्रति अधिकाधिक आसक्ति उत्पन्न करके अपनी भक्तिपूर्ण क्रियाओं को सवंर्द्धित कर सकते हैं। किसी न किसी प्रकार से आपको अपनी मालाओं का जप अत्यन्त सावधानीपूर्वक करना चाहिए और बिना असफल हुए नियमित रूप से ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिए।

## ७६. उत्कृष्ट भक्ति

मुझे आपका पत्र पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई। यह संभवतः पहली बार है जब आपने अपने आध्यात्मिक गुरु को पत्र लिखा है। कृपया एक उत्कृष्ट भक्त बनिए क्योंकि मेरा आपसे मात्र यही निवेदन है। आप सदैव एक निष्ठावान भक्त रहे हैं मुझे आशा है, कि आप जैसा शिक्षित व बुद्धिमान युवक श्रील प्रभुपाद के आन्दोलन की पूर्ण मनोयोग से सेवा करेगा। अतः

मेरा आपसे यही निवेदन है कि आप आज से ही अत्यंत गम्भीरतापूर्वक कृष्णभावनामृत का अभ्यास कीजिए। आपको प्रतिदिन अपनी मालाओं का ध्यानपूर्वक जप करना चाहिए। यदि आप नियमित रूप से मन्दिर नहीं जा सकते तो घर पर ही प्रातःकालीन कार्यक्रम व साधना का निष्पादन कीजिए और कम से कम एक घंटा श्रील प्रभुपादजी के ग्रन्थों का अध्ययन कीजिए। यदि आप इस सरल कार्यक्रम का पूर्ण मनोयोग से पालन करेंगे तो मुझे अत्यधिक हर्ष होगा।

## ७७. अटूट श्रद्धा

आपकी आध्यात्मिक उन्नति की उत्कट लालसा के विषय में जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। आप सदैव एक कर्तव्यनिष्ठ भक्त रहे है, जिसकी गुरु व श्रीकृष्ण के प्रति अटूट श्रद्धा है। कृपया कृष्णभावनामृत के प्रति सदैव गम्भीर बने रहिए। निःसन्देह बहिरंगा शक्ति सदैव हमें छलने का प्रयास कर रही है। अतः हमें उन साधनों के विषय में जानना चाहिए जिनके द्वारा हम अपनी भक्तिलता की सुरक्षा कर सकें। भक्ति मार्ग पर सदैव धैर्यवान् बनिए और क्रमशः श्रीकृष्ण यह उद्घाटित कर देंगे कि आपके लिए क्या श्रेयस्कर है?

नियमित रूप से हरिनाम संकीर्तन में भाग लेने व ध्यानपूर्वक जप करने के लिए आपको धन्यवाद! हमें अपने कर्मों को भगवान् के पवित्र नामों व कृष्ण-कथा के प्रति आकर्षित करना चाहिए। भक्ति में प्रगति करने हेतु प्रातःकालीन कार्यक्रम अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अतः कृपया प्रातःकालीन कार्यक्रम में भाग लेने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ बनिए। आध्यात्मिक जीवन में उन्नति का मार्ग छोटा नही है। आप गंभीर भक्त हैं, अतः अपनी बुद्धि का उपयोग कीजिए और आध्यात्मिक प्रगति करने के लिए सदैव कृत. संकल्प रहिए।

कृपया अपने क्षेत्र में निवास करने वाले मेरे अन्य शिष्यों को भी जप करने, पूर्ण मनोयोग से ग्रन्थों का अध्ययन करने व श्रीकृष्ण के प्रति आसक्ति उत्पन्न करने के लिए प्रयत्न करने हेतु प्रोत्साहित कीजिए। श्री चैतन्य चरितामृत में यह कहा गया है कि परम भगवान् की शुद्ध प्रेमा भक्ति की प्राप्ति सैकड़ों हजारों वर्षों तक पुण्य कर्म करते रहने के उपरान्त भी नहीं होती। इसे केवल एक मूल्य चुका कर प्राप्त किया जा सकता है और वह है, उसे पाने हेतु प्रबल आध्यात्मिक लोभ होना। यदि यह कहीं उपलब्ध हो तो कृपया इसे क्रय कर लीजिए।

## ७८. प्रत्येक क्षण अमूल्य है

श्रील प्रभुपाद की पुस्तकों का वितरण करते रहिए। प्रचार श्रीकृष्ण के प्रति अपनी शरणागति को बढ़ाने का सर्वोत्तम साधन है। व्यर्थ ही समय नष्ट मत कीजिए क्योंकि व्यर्थ गँवाया गया एक भी क्षण सम्पूर्ण जगत् की धन-सम्पत्ति देकर भी वापस नहीं पाया जा सकता।

## ७९. इन्द्रिय संयम कीजिए

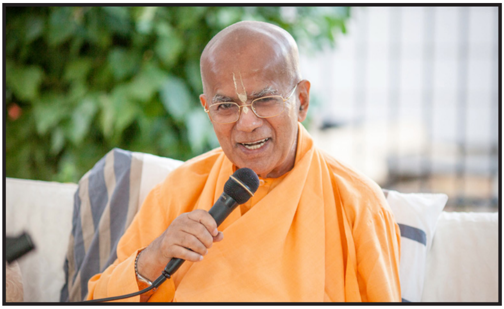
भक्ति मार्ग पर जब तक आप दृढ़प्रतिज्ञ नहीं हैं और आप अपनी इन्द्रियों के वेगों को सहन करने की इच्छा विकसित नहीं करते आप आध्यात्मिक प्रगति नहीं कर सकते। इन्द्रियाँ सदैव अपने इन्द्रिय-विषयों के द्वारा संतुष्टि पाने हेतु व्यथित रहती हैं। परन्तु जब तक उन्हें सकारात्मक रूप से आध्यात्मिक सेवाओं में संलग्न न किया जाए, उन्हें कभी संतुष्ट नहीं किया जा सकता। इसलिए हमें परम भगवान् के पवित्र नामों की शरण लेनी चाहिए व भक्तों का संग करना चाहिए। साधना भक्ति के कार्यक्रम का पालन कीजिए व व्यावहारिक सेवाओं में भी संलग्न रहिए।

## ८०. श्रील प्रभुपाद के ग्रन्थों को पढ़िए

क्योंकि आपने ब्राह्मण दीक्षा प्राप्त की है अतः आपको ब्राह्मण के कार्यों का भी निष्पादन करना चाहिए। आपको मन्दिर में विग्रह–पूजन करने की सेवा में जुड़ने का प्रयास करना चाहिए और यथाशक्ति प्रचार भी करना चाहिए। आपको श्लोकों को कंठस्थ करना चाहिए और नियमित रूप से श्रील प्रभुपाद के ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिए ताकि आप अन्य लोगों को आध्यात्मिक जीवन बिताने हेतु आश्वस्त कर सकें। अतः कृपया मेरे निवेदन को गम्भीरता पूर्वक मन में धारण कीजिए और प्रत्येक माह मुझे सूचित कीजिए कि आपने कितने नए श्लोकों को कण्ठस्थ किया।

## ८१. प्रात:कालीन कार्यक्रम का महत्व

प्रात:कालीन कार्यक्रम में भाग लेना आध्यात्मिक प्रगति हेतु अत्यन्त अनिवार्य है। यह भगवान् श्रीकृष्ण का गुणगान करने व उनका स्मरण करने में हमारी सहायता करता है। प्रात:कालीन कार्यक्रम हमारे आलसी मस्तिष्क को आध्यात्मिक ऊर्जा से आवेशित कर देता है ताकि हम दिन भर श्रीकृष्ण का चिंतन कर सकें। इसलिए महान संतो का भी यही परामर्श है कि हमें प्रात:कालीन प्रहरों में ही अपनी मालाओं का जप करना चाहिए।



# श्रील गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज का परिचय

परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज इस जगत में, 14 अगस्त, 1944 को अन्नदा एकादशी के परमशुभ दिन पर, नई दिल्ली, भारत में प्रकट हुए। अपने प्राकट्य के समय से ही उनका नाम गोपाल कृष्ण था, उनके आध्यात्मिक गुरु ने हरिनाम दीक्षा के समय उनका नाम नहीं बदला।

परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज ने दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक होने के बाद, फ्रांसीसी सरकार से छात्रवृत्ति पर पेरिस के सोरबोन विश्वविद्यालय में बिजनेस मैनेजमेंट का अध्ययन किया और बाद में, मॉन्ट्रियल में मैकगिल विश्वविद्यालय से बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में मास्टर डिग्री प्राप्त की। जहाँ उनकी भेंट उनके आध्यात्मिक गुरु, कृष्णकृपामूर्ति ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी श्रील प्रभुपाद से हुई।

इस्कॉन मॉन्ट्रियल के अध्यक्ष महापुरुष दास से सूचना प्राप्त होने पर कि इस्कॉन के संस्थापक-आचार्य, कृष्णकृपामूर्ति श्री श्रीमद् ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी, श्रील प्रभुपाद, 1 जून, 1968 को मॉन्ट्रियल पहुँचेंगे, परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज वहाँ 30 मई को पहुँचे। कीर्तन के बाद, परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज ने पूछा कि क्या वे कुछ सेवा

कर सकते हैं, और उन्हें तुरंत श्रील प्रभुपाद के कक्ष को साफ करने के लिए भेजा गया।

गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज ने कहा, *"मैं अपने भक्तिमय जीवन में प्रथम सेवा के रूप में इसे प्राप्त करने पर अत्यन्त भाग्यशाली अनुभव कर रहा था।"* उन्होंने श्रील प्रभुपाद के कक्ष के दरवाजे, अलमारियों और खिड़कियों को साफ किया। इस प्रकार, श्रील प्रभुपाद के प्रति गोपाल कृष्ण का सेवा भाव उनकी प्रथम भेंट से पूर्व ही प्रकट हो गया था।

परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज सर्वप्रथम 1 जून, 1968 की संध्या को श्रील प्रभुपाद से मिले। श्रील प्रभुपाद से भेंट के दो सप्ताह के भीतर ही उन्होंने निर्णय कर लिया कि वे उन्हें अपने आध्यात्मिक गुरु के रूप में स्वीकार करेंगे। परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज के शब्दों में, *"सर्वप्रथम श्रील प्रभुपाद से मिलने से पूर्व ही मेरे हृदय में भगवान् के प्रति समर्पण करने की प्रेरणा थी, और उनसे मिलने के दो सप्ताह के भीतर, मुझे अनुभव हुआ कि भगवान् कृष्ण चाहते थे कि मैं श्रील प्रभुपाद के शरणागत हो जाऊँ।"*

वास्तव में, दिसंबर 1967 के आसपास, परम सत्य की खोज में परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज ने अनेक हिंदू मंदिरों, गुरुद्वारों और गिरजाघरों का दौरा करना शुरू कर दिया था। प्रत्येक रविवार को वे एक अलग चर्च, मंदिर या गुरुद्वारा ढूँढते और पूरा दिन वहीं बिताते थे।

## गुरु-शिष्य संबंध की स्थापना

श्रील प्रभुपाद सदैव भारतीयों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण और अत्यधिक दयालु थे, किन्तु जो भी भारतीय उन्हें सुनने आते थे, उनमें से युवा गोपाल कृष्ण बहुत विशेष थे। जबकि अन्य सभी भारतीय प्रणाम करते थे और

कुछ मिनटों के लिए बैठते थे, परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज एकमात्र ऐसे भारतीय थे जो नियमित रूप से आते थे और प्रवचन के अंत तक बैठे रहते थे।

श्रील प्रभुपाद तीन माह तक मॉन्ट्रियल में रहे और प्रवचन दिये, परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज ने कहा, *"बेशक, उस समय मुझे श्रवण का महत्व ज्ञात नहीं था, किन्तु मेरी एकमात्र छोटी सी योग्यता यह थी कि श्रील प्रभुपाद से अपनी प्रथम भेंट से ही मैं उनका बहुत आदर करता था और उनके प्रवचनों में अंत तक बैठा रहता था, और उनके मंदिर से जाने के बाद ही बाहर निकलता था।"*

उस समय के आसपास, वे पेप्सी-कोला कम्पनी में मार्केटिंग रिसर्च के लिए कार्यरत थे। श्रील प्रभुपाद उनमें व्यक्तिगत रूप से बहुत रुचि लेने लगे और लगभग प्रतिदिन उनसे वार्तालाप करते थे। तब से, उन दोनों में नियमित पत्राचार शुरू हो गया, श्रील प्रभुपाद उन्हें प्रति माह तीन लंबे पत्र लिखते थे। इस प्रकार, एक अत्यन्त घनिष्ठ गुरु-शिष्य संबंध स्थापित होना प्रारम्भ हो चुका था।

27 मई, 1969 को श्रील प्रभुपाद ने उन्हें एक पत्र लिखा, *"चूंकि आपका नाम पहले से ही गोपाल कृष्ण है, तो इसे बदलने की कोई आवश्यकता नहीं है। अब आपको गोपाल कृष्ण दास के नाम में जाना जाएगा।"* परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज उस समय केवल पच्चीस वर्ष के थे!

बाद में, परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज मंदिर में स्थानांतरित हो गये और स्वयं को श्रील प्रभुपाद की सेवा में पूर्णतया व्यस्त कर लिया। कई वर्षों तक, उन्होंने श्रील प्रभुपाद के निजी सचिव के रूप में कार्य किया।

1975 में, श्रील प्रभुपाद ने परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी को भारत भेजा। श्रील प्रभुपाद ने उन्हें 1975 में पूरे भारत का गवर्निंग बॉडी कमिश्नर

(जीबीसी) बनाया। श्रील प्रभुपाद ने उन्हें विशेष रूप से भारत में पुस्तकों को मुद्रित करने और उनके वितरण को बढ़ाने का निर्देश दिया। इसके अतिरिक्त, श्रील प्रभुपाद ने उनकी समर्पित सेवा और निष्ठावान समर्पण की भावना को पहचानते हुए परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज को वृन्दावन, हैदराबाद, मायापुर और मुंबई जैसी विभिन्न महत्वपूर्ण परियोजनाओं की देखरेख करने का कार्य सौंपा।

परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज कहते हैं, *"श्रील प्रभुपाद चिंतित थे कि भारत में पुस्तक-मुद्रण का विस्तार होना चाहिए"। "मेरे प्रथम दो वर्षों के दौरान, वे मुझ पर बार-बार अधिक से अधिक पुस्तकें छापने के लिए दबाव डालते थे।"* परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज ने कहा, *"श्रील प्रभुपाद विशेष रूप से प्रसन्न हुए जब उन्होंने उन्हें हिंदी में श्रीमद-भागवतम के पहले स्कंध की प्रतियां भेंट कीं"* ।

श्रील प्रभुपाद ने उन्हें अपनी पुस्तकों को यथासंभव व्यापक रूप से वित. रित करने के लिए उनकी प्रतिभा का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। *"अब आप मार्केटिंग के अपने ज्ञान का उपयोग कृष्ण की सेवा के लिए कर सकते हैं, इदं हि पुंसस्तपसः श्रुतस्य वा, स्व इष्टस्य सूक्तस्य च बुद्धिदत्तयोः। यही शिक्षा की पूर्णता है।"*

1976 में, श्रील प्रभुपाद ने परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज को रूस के लिए जी.बी.सी. नियुक्त किया। उन्होंने सोवियत संघ, एक साम्यवादी देश (जिसे अब स्वतंत्र राज्यों का राष्ट्रमंडल कहा जाता है) की अनेक यात्राएँ कीं और गंभीर खतरों का जोखिम उठाते हुए, उन्होंने वहाँ प्रचार किया और पुस्तकें वितरित कीं। श्रील प्रभुपाद के निर्देश पर, उन्होंने माया के विरुद्ध एक यथार्थ युद्ध छेड़ते हुए, मॉस्को में एक अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले में भाग लिया।

श्रील प्रभुपाद के निर्देशों ने, जो उनके जीवन और प्राण थे, उनकी दृष्टि को सशक्त बनाया और अद्‌भुत एवं असामान्य परिणाम प्रकट होने लगे। सोवियत संघ में साम्यवादी शासन के पतन और धार्मिक अभिव्यक्ति को मिली स्वतंत्रता के बाद, उन्होंने तत्कालीन सोवियत संघ में अनेक केंद्र स्थापित करने में सहायता की।

## संन्यास आश्रम स्वीकार करना

1981 में परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज ने संन्यास ग्रहण कर लिया। एक वर्ष बाद, मार्च 1982 में, गौर-पूर्णिमा के शुभ अवसर पर, परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज एक 'दीक्षा' गुरु बने।

## भगवान् श्री चैतन्य के आध्यात्मिक दूत

परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज भगवान् श्री चैतन्य के एक सशक्त प्रतिनिधि होने के नाते, भगवान् गौरांग की कृपा को वितरित करने में अथक रूप से लगे रहे, और उन महत्वपूर्ण आध्यात्मिक गुरुओं में से एक थे जो भगवान् गौरांग की भविष्यवाणी, "विश्व के प्रत्येक नगर और गाँव में मेरे नाम का कीर्तन होगा" को पूरा करने के लिए पूर्णतया समर्पित थे।

बद्ध जीवात्माओं को पवित्र नाम वितरित करना, प्रतिकूल वातावरण और जोखिम भरे स्थानों में प्रचार करना, संघ का उत्तम प्रबंधन करना और भक्ति योग के अनुशीलन में अनुकरणीय व्यवहार का प्रदर्शन उनके अंतिम श्वास तक अनियंत्रित रूप से जारी रहा! परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज ने विश्व भर में बद्ध जीवात्माओं के उद्धार के लिए व्यक्तिगत रूप से बहुत बड़ा उत्तरदायित्व निभाया।

परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज मुंबई, उत्तरी भारत (जिसमें नई दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, वृंदावन, चंडीगढ़ शामिल हैं), गुजरात, मायापुर, केन्या, कनाडा, अमेरिका के कुछ राज्य और स्वतंत्र राज्यों के राष्ट्रमंडल (रूस) के कई भागों के जी.बी.सी. थे। इसके अतिरिक्त, वे विश्व के सबसे बड़े प्रकाशक और वैदिक साहित्यों के वितरक, भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष और ट्रस्टी थे।

परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज ने 1977 में श्रील प्रभुपाद के तिरोभाव के बाद से अनेक बड़े इस्कॉन मंदिरों को प्रेरित करने और पूर्ण करने में भाग लिया। उन्होंने दुनिया भर में सैकड़ों मंदिरों और केंद्रों को प्रेरित करने, उद्घाटन करने या शुरू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई – जिनमें दिल्ली–एनसीआर के आसपास के अठारह मंदिर शामिल हैं।

लाखों राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों तथा भक्तों को आकर्षित करने के अतिरिक्त, ये मंदिर लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व परम भगवान् श्री कृष्ण द्वारा बोली गई श्रीमद्भगवद–गीता यथारूप के साथ अन्य वैदिक साहित्यों के दिव्य संदेश को प्रसारित करने में भी अग्रणी भूमिका निभा रहे है। ये मंदिर कॉलेज विश्व विद्यालाओं में एवं कॉर्पोरेट में प्रचार के साथ–साथ भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), इंजीनियरिंग कॉलेजों और अनेक अन्य प्रबंधन संस्थानों में प्रचार करने, छात्रों, दार्शनिकों, शिक्षाविदों, राजनेताओं, बुद्धिजीवियों और यहाँ तक कि कट्टर नास्तिकों को प्रेरणा देने में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। इनमें से कुछ मंदिर वैदिक साहित्य के वितरण में विश्व में प्रथम स्थान पर हैं।

1974 में अपने शिष्यों को दिए गए श्रील प्रभुपाद के निर्देश से प्रेरित होकर कि, "मंदिर के दस मील के दायरे में कोई भी भूखा नहीं रहना चाहिए। मैं चाहता हूँ कि आप तुरंत भोजन परोसना शुरू करें," इस्कॉन

केंद्र त्यौहारों के साथ-साथ नित्यप्रति उत्कृष्ट कृष्ण प्रसाद वितरित करते हैं। इसके अतिरिक्त, मुंबई और दिल्ली जैसे अनेक इस्कॉन केंद्रों को कृष्ण प्रसाद वितरित करने के माध्यम के रूप में सरकार के मिड डे मील कार्यक्रम में सक्रिय रूप से लिया जाता है।

परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज ने अन्नामृत फाउंडेशन (जिसे पहले इस्कॉन फूड फॉर लाइफ प्रोग्राम के नाम से जाना जाता था) में कई भक्तों को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जो इस समय पूरे भारत में भूखे बच्चों को भोजन कराते हुए प्रतिदिन 12,00,000 पुरा भोजन परोस रहा है। संयुक्त राष्ट्र - विश्व खाद्य कार्यक्रम ने इस नेक कार्यक्रम की सराहना की है और तकनीकी सहायता प्रदान करने पर सहमति व्यक्त की है। भारत सरकार भी इन नेक प्रयासों को मान्यता प्रदान करती है और सभी राज्य सरकारें इस परियोजना को अपने-अपने राज्य के अन्य शहरों में भी विस्तारित करना चाहती हैं।

ये सभी आध्यात्मिक गतिविधियाँ परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज की श्रील प्रभुपाद के प्रति गहन प्रतिबद्धता और समर्पण, उनके अथक, समर्पित प्रयासों, उनके निस्वार्थ एवं दयालु स्वभाव और भगवान् चैतन्य महाप्रभु के आंदोलन को विश्व स्तर पर फैलाने के आंतरिक दृढ़ संकल्प की एक झलक मात्र हैं।

सभी क्षेत्रों में सामूहिक भागीदारी को प्रोत्साहित किया जा रहा है और विभिन्न लक्ष्य स्थापित किये जा रहे हैं। सी.आई.एस. में, महाराज को अभूतपूर्व सफलता मिली है! इमारतों का अधिग्रहण किया गया है, पुस्तक वितरण में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, फूड फॉर लाइफ कार्यक्रम प्रारम्भ किए गए हैं, साप्ताहिक सेमिनार आयोजित किए जा रहे हैं, भोजनालय विकसित किए जा रहे हैं, स्कूलों और कॉलेजों में नियमित प्रचार कार्यक्रम

आयोजित किए जा रहे हैं, और लोग कृष्णभावनामृत आंदोलन के अनुकूल हो रहे हैं। इस प्रकार भगवान् कृष्ण की कृपा सर्वत्र वितरित हो रही है!

अन्य परियोजनाओं में युवा संवर्धन कार्यक्रम, विश्व के हर कोने में गृह कार्यक्रम और श्रील प्रभुपाद की पुस्तकों के अनुवाद, मुद्रण, प्रकाशन और वितरण की देखरेख शामिल है। अपनी दक्ष देखरेख में, महाराज ने पुस्तकों के वितरण को इस्कॉन के इतिहास में उच्चतम सीमा तक पहुँचाया! मैराथन से पूर्व, महाराज सभी को पुस्तकें वितरित करने के लिए प्रेरित करने के लिए विभिन्न मंदिरों में जाते थे।

परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज का सजीव उत्साह एक संशयवादी को भी विराम देने वाला और उनके शब्दों पर चिंतन करवाने वाला था। कई लोग उनकी निस्वार्थ और दयालु बुद्धि से अभिभूत थे। उनमें लोगों के जीवन को आध्यात्मिक जीवन अपनाने के लिए प्रेरित करने की क्षमता थी, वे सूक्ष्मतम अवधारणाओं को अत्यंत सराहनीय सहजता और धैर्य के साथ समझाते थे।

एक बार श्रील प्रभुपाद ने महाराज के विषय में एक पत्र में लिखा, "भारत में जो कुछ भी किया गया है, वह गोपाल द्वारा ही किया जा रहा है।" श्रील प्रभुपाद सदैव उनके विवेक और आत्मीय गुणों की प्रशंसा करते थे, और उन्होंने एक बार टिप्पणी की, "गोपाल एक बहुत अच्छा युवक है और उसे प्रोत्साहित किया जाना चाहिए"। यहाँ तक कि कट्टर नास्तिक भी उनकी सादगी से आकर्षित हुए बिना नहीं रह सके। प्रत्येक चर्चा, प्रत्येक चेष्ठा और प्रत्येक उत्तर ने उस आंदोलन के प्रति उनके आंतरिक दृढ़ विश्वास को उजागर किया, जिसे उन्होंने अपनाया था।

परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज ने 5 मई, 2024 को देहरादून में अपनी सेवाओं को करते हुए इस संसार से प्रस्थान किया। अपने प्रिय

आध्यात्मिक गुरु की सेवा में गौरवशाली जीवन जीते हुए, वे अपनी अंतिम श्वास तक एक सक्षम सेनापति बने रहे। खराब स्वास्थ्य और शारीरिक चुनौतियों के बावजूद, वे अपने अंतिम श्वास तक, भगवान् चैतन्य महाप्रभु के आंदोलन की सेवा करते रहे। वे एक नए मंदिर का भूमिपूजन करने और इस्कॉन ब्यूरो बैठकों के मेजबान के रूप में देहरादून में थे। इस्कॉन ब्यूरो के सबसे लंबे समय तक सेवारत अध्यक्ष, परम पूज्य गोपाल कृष्ण गोस्वामी महाराज, दिल के दौरे पड़ने से पहले, जब तक संभव हो सका बैठकों की अध्यक्षता करते रहे। वे दुनिया के सबसे प्रसिद्ध और सम्मानित आध्यात्मिक अग्रणियों में से एक हैं। उनके तिरोभाव पर भक्तों, सरकारी अधिकारीयों और राजनेताओं ने समान रूप से शोक व्यक्त किया, इस भौतिक जगत में एक शुद्ध भक्त के सानिध्य से वंचित होने की क्षति पर गहन दुःख की बाढ़ आ गई।

*मूर्खता है सोचना यह, होती है मृत्यु वैष्णवों की,*
*जीवन्त रखती है सदैव उन्हें, जब उनकी दिव्य वाणी!*
*मरते हैं वैष्णव जीने के लिए, और प्रयास करते हैं जीते-जीते*
*सर्वत्र भगवन्नाम प्रचार का, शहर-शहर, गली-गली।*

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

## Books By Śrīla Gopāla Kṛṣṇa Gosvāmī Mahāraja

### English 24 Books :

1. Awakening the Soul 2. Divine Instructions 3. Divine Vision– from the Vedas 4. Kṛṣṇa: The Source of Happiness 5. Qualities of a Devotee 6. The Greatest Treasure 7. The Highest Reality of Spiritual Life 8. Waves of Wisdom 9. Your Insiganificant Servant 10. Sadhusanga: The Birth Place of Bhakti 11. Bhakti - The Most Valuable Asset 12. Freedom By Surrender 13. The Purpose of Life 14. Surrender - The Most Auspicious Decision 15. Beauty of the Soul 16. Kripa Bindu (Drops of Mercy) 17. Krishna Cintan : Always Remember Krishna 18. Prashnottar-Goshti 19. Sravan Mangalam 20. Bhavadīya-vārtām 21. Tattva-jijñāsā 22. Hari-toṣaṇam 23. The Spiritual Uproar 24. Nitya-sevā - A Devotee's Heartbeat

### Hindi 15 Books :

1. कृपा बिन्दु 2. कृष्ण–चिंतन 3. दिव्य उपदेश 4. ज्ञान की तरंगें 5. जीवन की पूर्णता 6. साधवाः साधुभूषणाः 7. साधु–संग 8. श्रीकृष्ण – वास्तविक सुख के आश्रयस्थल 9. प्रश्नोत्तर–गोष्ठी 10. भक्तिमय सेवा 11. दिव्य चक्षु 12. सर्वोत्तम निधि 13. जीव जागो 14. श्रवण मंगलम 15. चक्षु दान

### Other Language 10 Books:

1. Maksad-e-Zindagi (Urdu edition of Jivan ki Purnta) 2. Jivan ni Purnta (Gujarati edition of Jivan ki Purnta) 3. Jivanachi Purnta (Marathi edition of Jivan ki Purnta) 4. The Purpose of Life (Chinese) 5. Freedom By Surrender (Russian) 6. Sadhu Sanga (Russian) 7. Qualities of Devotees (Russian) 8. The Purpose of Life (Russian) 9. The Purpose of Life (in Telugu) 10. The Purpose of Life (in Orida)